मूल्य : 20/-
पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974
वर्ष : ३
जून : २०१९, विक्रमी सम्वत् : २०७६
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०, दयानन्दाब्द : १९५
अंक : १२

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल
जन्म दिवस : 4 जून

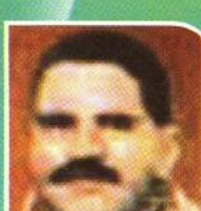

पंडित चमूपति, एम.ए.
स्मृति दिवस : 15 जून

महाराणा प्रताप
जयंती : 16 जून

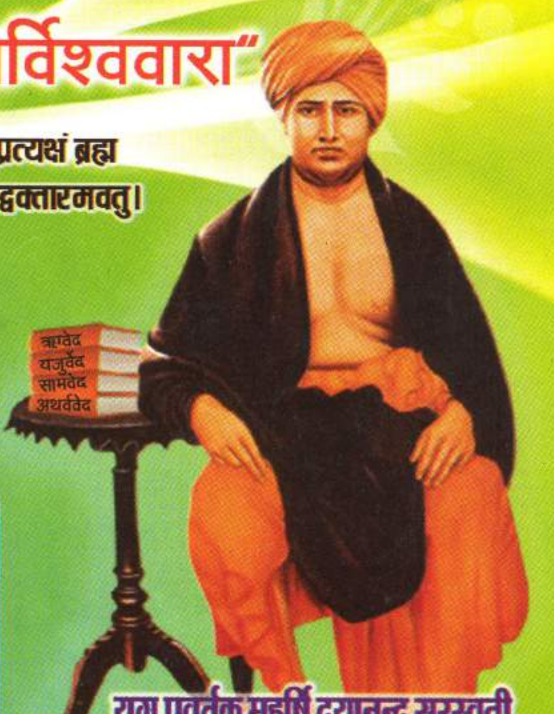

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

आर्ष कन्या गुरुकुल सोरखा में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां।

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

देश में पनपती उग्रवादी विचारधारा

कोई भी देश अपनी सांस्कृतिक विरासत पर खड़ा होता है। जिसके मूल में संस्कृति को मूर्तरूप देने वाली विचारधारा होती है। मजबूत सिद्धांतों एवं मान्यताओं, परम्पराओं तथा आध्यात्मिक चिंतन के आधार पर कोई भी देश प्रगति के शिखर पर आरूढ़ होता है। भारतीय परम्परा ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, मनीषियों की विचारधारा है, जिसका मूल वेद है। समस्त सद्विचारों का मूल स्रोत वेदों में प्राप्त होता है। **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**, महर्षि दयानन्द ने उद्घोष किया- वेद सब सत्य विचारों, विद्याओं का पुस्तक है। किसी भी विषय को सही से समझने के लिए वेद रूपी ज्ञानचक्षु की महती आवश्यकता है। वेद का संदेश है- मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति सद्भाव रखते हुए सभी मनुष्य परस्पर मित्रवत् व्यवहार करें। वेद का आदेश है- **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।** स्वस्थ समाज तथा विश्व के निर्माण के लिए धराधाम पर रहने वाले मानवमात्र को समस्त हितकारी कार्यों में साथ मिलकर चलना चाहिए। भारतीय संस्कृति को मूल आधार पर तीन शब्दों से व्यवहृत किया जाता है सत्य, अहिंसा एवं प्रेम। किसी भी परिस्थिति मे सत्य को छोड़ा नहीं जा सकता। अत: उपनिषद का ऋषि उद्घोष करता है कि- असतो मा सद्गमय। सभी मनुष्य असत्य को छोड़कर सत्य के मार्ग पर आगे बढ़े। किंतु आज भारतीय जनमानस असत्य से प्रभावित तथा भ्रष्टाचार से ग्रस्त दिखाई पड़ता है। जिस देश में राजा हरिश्चंद्र एवं महाराज युधिष्ठिर जैसे सत्यवादी हुए हो उस देश में ऐसा होना चिंताजनक है। अहिंसा का उद्घोष किया-अहिंसा परमो धर्म:, महर्षि पतञ्जलि ने भी योग के प्रमुख अंगों की व्याख्या का प्रारम्भ करते हुए यमों के अंतर्गत अहिंसा को प्रथम स्थान पर रखा। किंतु आजकल छोटी-छोटी बातों पर व्यक्ति हिंसक प्रवृत्ति का प्रदर्शन करने लगा है। एक-दूसरे को मारने पर उतारू हो जाता है। देश की सीमाओं पर युद्ध लड़ना प्राण लेने-देने की परिस्थितियां भिन्न होती है। किंतु वैसी परिस्थितियों को देश के आंतरिक मामलों में निर्मित करना अत्यंत घातक होता है। इसी प्रवृत्ति के बढ़ने से देश दुनिया में आतंकवाद एवं उग्रवाद का जन्म हुआ तथा फल-फूल रहा है। अभी पिछले दिनों एक अशिक्षित महिला ने महात्मा गांधी की निंदा करते हुए नाथूराम गोडसे को देश भक्त एवं सही बताया। इससे पता चलता है कि देश में कैसी परिस्थितियों का निर्माण किया जा रहा है। महात्मा गांधी की बहुत सारी बातों से हम असहमत हो सकते हैं, किंतु इसका मतलब यह नहीं कि हम गोडसे को महान देशभक्त बताना प्रारम्भ कर दें। दुख तो तब होता है जब समाज के अन्य लोग भी ऐसी बातों का समर्थन करने लगते हैं। मैं समझता हूं कि ऐसी बातों की सबको भर्त्सना करनी चाहिए।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

भारतीय संस्कृति को मूल आधार पर तीन शब्दों से व्यक्त किया जाता है। सत्य, अहिंसा एवं प्रेम। किसी भी परिस्थिति में सत्य को छोड़ा नहीं जा सकता। अतः उपनिषद का ऋषि उद्घोष करता है कि- असतो मा सद्गमय। सभी मनुष्य असत्य को छोड़कर सत्य के मार्ग पर आगे बढ़े। किंतु आज भारतीय जनमानस असत्य से प्रभावित तथा भ्रष्टाचार में ग्रस्त दिखाई पड़ता है। जिस देश में राजा हरिश्चंद्र एवं महाराज युधिष्ठिर जैसे सत्यवादी हुए हों उस देश में ऐसा होना चिंताजनक है। अहिंसा का उद्घोष किया-अहिंसा परमो धर्मः, महर्षि पतञ्जलि ने भी योग के प्रमुख अंगों की व्याख्या का प्रारम्भ करते हुए यमों के अंतर्गत अहिंसा को प्रथम स्थान पर रखा। किंतु आजकल छोटी-छोटी बातों पर व्यक्ति हिंसक प्रवृति का प्रदर्शन करने लगा है। एक-दूसरे को मारने पर उतारू हो जाता है। देश की सीमाओं पर युद्ध लड़ना प्राण लेने-देने की परिस्थितियां भिन्न होती हैं। किंतु वैसी परिस्थितियों को देश के आंतरिक मामलों में निर्मित करना अत्यंत घातक होता है। इसी प्रवृत्ति के बढ़ने से देश दुनिया में आतंकवाद एवं उग्रवाद का जन्म हुआ तथा फल-फूल रहा है। अभी पिछले दिनों एक अशिक्षित महिला ने महात्मा गांधी की निंदा करते हुए नाथूराम गोडसे को देश भक्त एवं सही बताया। इससे पता चलता है कि देश में कैसी परिस्थितियों का निर्माण किया जा रहा है।

ईश्वर की रचना और मनुष्य की रचना में क्या अंतर है

डॉ. गंगाशरण आर्य

इस सृष्टि में तीन सत्ताएं सनातन (जो सदा से चली आ रही है) व अनंत (जिनके समाप्त होने की कभी बारी नहीं) है अनादि (जिसका प्रारम्भ नहीं है) वे हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर जीवात्मा के लिए प्रकृति द्वारा इस सृष्टि की रचना करता है। इसमें ईश्वर-सृष्टि को रचने वाला, जीव-इस सृष्टि का भोग करने वाला और प्रकृति जिससे ईश्वर सृष्टि बनाता है। इस सृष्टि में ईश्वर सर्वोपरि यानी सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहारकर्ता है। जीव साधक है और प्रकृति साधन है। इस सृष्टि में प्रकृति जड़ (निर्जीव) है, ईश्वर व जीव चेतन है। इसलिए ईश्वर व जीव अपने-अपने कार्य अलग-अलग करते हैं। इन दोनों के कार्यों में क्या अंतर है? इसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है-

ईश्वर सर्वव्यापक व निराकार है : ईश्वर सर्वव्यापक होने से हर वस्तु व पदार्थ के अंदर व्यापक है। उसका कार्य भी सर्वत्र चलता रहता है जिससे हर प्राणी उससे गति पाकर बढ़ता है। जैसे एक बीज से पहले छोटा पौधा बनता है, फिर वही पौधा बढ़ते-बढ़ते पूरा वृक्ष बन जाता है, वैसे ही पहले छोटा बच्चा पैदा होता है, फिर उसमें यौवन आ जाता है और फिर बुढ़ापा आ जाता है। यह ईश्वर की ही क्रिया है, जो अंदर ही अंदर होती रहती है। ईश्वर निराकार (अदृश्य) होने से कर्ता रूप में अदृश्य है, किसी को दिखाई नहीं देता। मनुष्य हर वस्तु से बाहर है और साकार है, इसलिए उसकी क्रिया बाहर से होती है और वह दिखाई देता रहता है, जैसे घड़ी बनाने वाला, मकान बनाने वाला आदि। यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि एक सूक्ष्म वस्तु में उससे अधिक सूक्ष्म वस्तु समा जाती है, जैसे लोहे के परमाणुओं से अग्नि के परमाणु सूक्ष्म है इसलिए लोहा गर्म करने से अग्नि लोहे में समा जाती है। ऐसे ही ईश्वर सबसे सूक्ष्म होने से प्रकृति के कण-कण व प्राणियों की आत्मा में भी समाया हुआ है और सर्वत्र रहकर ही अपनी क्रिया करता रहता है, जबकि मनुष्य स्थूल होने से बाहर से क्रिया करता है। जैसे हलवाई अर्थात् मनुष्य गुलाब जामुन, रसगुल्ले, जलेबी, इमरती आदि बनाता है तो उसमें रस बाहर से भरता है, जबकि ईश्वरीय रचना कितनी गजब है। देखिए जब संतरे, मौसमी, अनार, नींबू आदि बनाता है तो उनमें रस बाहर से भरने की आवश्यकता नहीं होती वह तो सील बंद व पूर्ण रस से भरा-भराया होता है, कभी देखा है किसी ने ईश्वर को रस बाहर से भरते हुए? अत: उपरोक्त कथन सत्य है ईश्वर चेतन, निराकार व सर्वव्यापक होने से अपने कार्य करता रहता है और किसी को दिखाई भी नहीं देता अर्थात् दृष्टिगोचर नहीं होता।

ईश्वर सर्वज्ञ है : जो सर्वज्ञ होता है, उसकी रचना हमेशा पूर्ण होती है। ईश्वर सर्वज्ञ होने से उसकी सभी कृतियां त्रुटि से रहित व पूर्ण हैं जैसे सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, मनुष्य, फल, फूल, वनस्पति आदि। सृष्टि के आदि में (प्रारंभ में) मनुष्यों के ज्ञान के लिए भी वेद ईश्वर प्रदत्त हैं, इसलिए वेद भी ईश्वरीय ज्ञान है और वह भी पूर्ण है। वेदों में हम एक छोटी मात्रा की जगह बड़ी मात्रा कर देवे या अर्द्धविराम व पूर्ण विराम में भूल कर देवें तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा और वह भूल पकड़ी जायेगी। क्यों पकड़ी जाएगी? क्योंकि वेद की एक-एक कड़ी सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए है व पक्षपात रहित है मिलावट करने पर पक्षपात हो जाएगा, यही पहचान है। ऋषियों द्वारा जटा पाठ, माला पाठ इत्यादि अनेक प्रकार से वेदों की रक्षा का उपाय किया हुआ है। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ से लेकर अभी तक वेदों में कोई मिलावट नहीं हुई, जबकि मनुस्मृति, रामायण, महाभारत व गीता में बहुत प्रक्षिप्त है। अत: वेद अपौरुषेय कहलाते हैं। एक बात और ध्यान देने योग्य है कि मनुष्यों को अपने जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाने के लिए तथा मनुष्य का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने के लिए जितना ज्ञान विज्ञान चाहिए उतना ही ज्ञान ईश्वर ने वेदों में दिया है। इसलिए मनुष्यों के लिए तो वेद ज्ञान पूर्ण है, ईश्वर के लिए नहीं, ईश्वर का ज्ञान अथाह है। मनुष्य अल्पज्ञ है इसलिए उसकी रचना भी अपूर्ण है। एक व्यक्ति ने एक घड़ी बनाई, दूसरा उससे अच्छी बना देगा, तीसरा उससे और अच्छी बना देगा। अच्छे की कोई सीमा नहीं होती इसलिए मनुष्य की रचना हमेशा अपूर्ण ही रहेगी। ईश्वर जो कृति बनाता है मनुष्य उसको कभी भी नहीं बना सकता। जैसे ईश्वर सृष्टि को चलाने के लिए बीज, रज और वीर्य बनाता है, मनुष्य इनको कभी भी नहीं बना सकता है। केवल उसकी नकल करता है जैसे पक्षियों को देखकर वायुयान आदि का निर्माण किया परंतु पक्षी नहीं बना सका। ➲

स नो बन्धुर्जनिता

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के सातवें मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

(गतांक से आगे...)

जगदीश्वर हमारे कार्यों को सिद्ध करने के लिए साधन-सुविधा बहुत कुछ देते हैं। हमारा मस्तिष्क संयंत्र (चित्त-बुद्धि, स्मृति मन सभी शामिल हैं) रक्त संचरण संयंत्र, पाचन संयंत्र, गुर्दे, किडनी, कर्मेंद्रियां, ज्ञानेंद्रियां, श्वासतंत्र, सबका समन्वय सामंजस्य, यह सब प्रभु की ही देन है। यह साधन हमारे पास हो न हो, तो हम कोई काम पूरा करने की सोच भी नहीं सकते। विधाता प्रभु हमारे कामों को पूर्ण करने हारे हैं- इस बात पर एक और प्रकार से विचार करते हैं। एक मंत्र के भावो पर पर ध्यान दीजिए-

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन।
स धीनां योगमन्विति।। -ऋग. १०-१८-७

अर्थात- जिस परमेश्वर के बिना, उनकी कृपा सहायता के बिना विद्वान, बुद्धिमान, समझदार, चतुर लोगों के भी यज्ञ, सुकर्म, शुभकर्म, मंगलकारी कार्य भी सिद्ध नहीं होते, पूर्ण नहीं हो पाते। वह परमेश्वर मंगल विधायी बुद्धियों में व्याप्त हो जाता है। शुभकर्म प्रेरक बुद्धियोग परमेश्वर के साथ हो जाता है।

परमेश्वर की व्यवस्था है, विधान हैं, नियम हैं। जब तक हम प्रभु की व्यवस्था के अनुकूल हैं, तब तक हमें सफलता मिलती है। जब तक हमारे आचरण व्यवहार, क्रिया-कलाप का सामंजस्य प्रभु के नियमों के साथ हैं-So long we are in tune with the rules of God, हम सफल होते है। एक विद्यार्थी कई प्रश्न लगाता है, जब तक वह गणित के नियमों का पालन करता है, गुरु के बताये नियमों के अनुकूल चलता है, उसका कार्य सिद्ध होता है। जब तक हम प्रभु के आदेश, नियम के अनुकूल चलते हैं हम सफल होते हैं, हमारे कार्य सिद्ध होते हैं। परमेश्वर की कृपा से हमारे सारे कार्य सिद्ध होते हैं, सो कैसे? रेल व्यवस्था या हवाई यात्रा की व्यवस्था का एक संगठन-प्रबंधन Organisation System है। पटरी बनती है, सड़क बनती है, डिब्बे बनते हैं, संचालन व्यवस्था होती है, सुरक्षा व्यवस्था होती है, समय सारणी बनती है। हजार तरह के काम है। सारी व्यवस्था का एक अध्यक्ष, निदेशक प्रबंधक, कोई बोर्ड या व्यक्ति होता है। उसके नियम हैं, उन्हीं नियमों पर चलने से हमारी यात्रा सिद्ध होती हैं।

प्रथम तो यात्री को नियम की जानकारी हो। यात्री को कलकत्ता से दिल्ली जाना है तो वह मुंबई की ट्रेन पर बैठ गया, अब उसकी यात्रा कैसे पूर्ण होगी? या 7 बजे गाड़ी छूटनी थी, यात्री ८ बजे गाड़ी पकड़ने आया तो भी उसका कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। यात्री को नियमों के सामंजस्य में चलने पर ही सफलता मिलेगी, उसकी यात्रा पूर्ण होगी।

हम जगतपति जगदीश्वर की व्यवस्था, उसके ऋतरूपी-सत्यरूपी नियमों का ज्ञान प्राप्त करें उसी के अनुसार चले तो हमारे सारे कार्य पूर्ण होते हैं और यह सब प्रभु की कृपा ही है। रेलगाड़ी का भोला यात्री, या हम लोगों जैसा तथाकथित लिखा-पढ़ा व्यक्ति भी रेल के प्रबंधन का विस्तृत ज्ञान या सूक्ष्म ज्ञान नहीं रखता, फिर भी आवश्यक नियमों को जानने और परखने से हमारी यात्रा पूर्ण होती है

हम जगतपति जगदीश्वर की व्यवस्था, उसके ऋतरूपी-सत्यरूपी नियमों का ज्ञान प्राप्त करे उसी के अनुसार चले तो हमारे सारे कार्य पूर्ण होते हैं और यह सब प्रभु की कृपा ही है। रेलगाड़ी का भोला यात्री, या हम लोगों जैसा तथाकथित लिखा-पढ़ा व्यक्ति भी रेल के प्रबंधन का विस्तृत ज्ञान या सूक्ष्म ज्ञान नहीं रखता, फिर भी आवश्यक नियमों को जानने और परखने से हमारी यात्रा पूर्ण होती है और यह संगठन हमारी यात्रा को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम कह सकते है कि यह प्रबंधन, यह प्रबंधक हमारी यात्रा पूर्ण करवाने वाला है। हमारी यात्रा पूर्ण हो, हमारी जीवन यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण हो, इसके लिए हमारी बुद्धि का प्रभु के नियमों से सामंजस्य, समलयता (In tune with) अपेक्षित है। यह हमारे स्वभाव संस्कार में भी हो सकता है, यह ऋत-सत्य का हमारी वृद्धि प्रज्ञा से सामंस्य, हमारी चेष्ठा साधना से भी संभव है। भक्त की भाषा में प्रभु हमारी बुद्धियों में बैठ जाते हैं- हमारे सोचने विचारने में जगदीश्वर के विधान प्रविष्ट हो जाते हैं- 'स (परमेश्वरः) धीनां योगमिन्वति'। उस तिथि में हमारा बुद्धियोग परमेश्वर के साथ, उनके नियम व्यवस्था, कृपा के साथ हो जाता है, और हमारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं।

और यह संगठन हमारी यात्रा को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम कह सकते है कि यह प्रबंधन, यह प्रबंधक हमारी यात्रा पूर्ण करवाने वाला है।

हमारी यात्रा पूर्ण हो, हमारी जीवन यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण हो, इसके लिए हमारी बुद्धि का प्रभु के नियमों से सामंजस्य, (In tune with) अपेक्षित है। यह हमारे स्वभाव संस्कार में भी हो सकता है, यह ऋत-सत्य का हमारी वृद्धि प्रज्ञा से सामंजस्य हमारी चेष्ठा साधना से भी संभव है। भक्त की भाषा में प्रभु हमारी बुद्धियों में बैठ जाते हैं- हमारे सोचने विचारने करने में जगदीश्वर के विधान प्रविष्ट हो जाते हैं- 'स (परमेश्वर:) धीनां योगमिन्वति'। उस तिथि में हमारा बुद्धियोग परमेश्वर के साथ, उनके नियम व्यवस्था, कृपा के साथ हो जाता है, और हमारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं।

हमारे कार्यों का पूर्ण करने वाला यह ऋताचार-सत्याचरण, गुरु, आचार्य संत, महात्मा के साथ बुद्धि का योग होने से अधिक संभव है। भगवद्गीता के निम्न प्रसंग पर ध्यान दें-

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञान यज्ञः परन्तप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ, ज्ञाने परिसमाप्यते।।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं, ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः॥
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव।

-गीता. ४-३३,३४,३५

भाव यह है कि अर्जुन जैसे महान् योद्धा को मोह हो गया था, परिवार का मोह, गुरुजनों का मोह, सगे संबंधियों का मोह, उसे उसके कर्त्तव्य से, उचित कर्त्तव्य से नीचे गिरा रहे थे। हम भी, कभी पुत्र का मोह, कभी घर का मोह, कभी भोग विलास का मोह, कितने प्रकार के प्रपंचों से पथभ्रष्ट होने की स्थति में आ जाते हैं, और हमारी बुद्धि से प्रभु का योग नष्ट हो जाता है। उस परिस्थिति में हमें गुरु-विद्वान, आचार्य-संत महात्मा के सम्पर्क में जाकर 'ज्ञान-यज्ञ' करना चाहिए। ताकि हमारी बुद्धि का प्रभु परमेश्वर से योग हो जाय- 'स धीनां योगमिन्वति।'

श्रीकृष्ण कहते हैं, अर्जुन! द्रव्य यज्ञ, अग्निहोत्र आदि से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ हैं, सारे कामों की परिणति ज्ञान में है और वह ज्ञान (ऋताचार-सत्याचार से बुद्धि योग-उचित, शुभ, मंगल विधायी बुद्ध की प्राप्ति)। ज्ञानी तत्वदर्शियों से मिलेगा, वह ज्ञान-बुद्धि योग प्रणिपात-समर्पण, सेवा-शंका समाधान से मिल सकेगा। 'विधाता' हमारे सारे काम पूर्ण करेंगे जब हमारा उनसे बुद्धि योग हो जाय-

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।

-गीता १०-१०

इस प्रकार आचार्य-संत-महात्माओं की निरन्तर सेवा में लगे रहने से प्रभु के साथ बुद्धि योग हो जाता है। हमारी बुद्धि में, हमारे चिन्तन में पुन: क्रियाकलाप में दानव का प्रवेश न हो अतः सुमति-सद्बुद्धि की प्रार्थना करते रहना चाहिए-

'वयं देवानाम् सुमतौ स्याम'

ऋग. -७-४१-४

हम देवताओं की, पूर्ण विद्वान् धार्मिक आप्त लोगों की उत्तम प्रज्ञा और सुमति में सदा प्रवृत्त रहें।

देवानाम् भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।
देवानाम् सख्यमुपसेदिमा वयम्।।

-यजु. २५-१५

हे प्रभो! हमें देवताओं की कल्याण कारिणी, मंगलविधायनी, सरल-निष्कपट व्यवहार-वर्ताववाली सुबुद्धि दो। हमे सदा देवताओं की मित्रता प्राप्त हो।

'धियो यो नः प्रचोदयात्' यजु. ३६-३

प्रभो! हमारी बुद्धि को सुमार्ग में प्रेरित करते रहे।

प्रभु का भद्र, मंगल विधान, हमारी बुद्धि में जब प्रवेश कर जाता है, तो हम सफलता की ओर अग्रसर हो जाते हैं- प्रभु की कृपा से हमारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं, तभी तो प्रभु 'विधाता' है। हमारे सारे कार्यों को पूर्ण करने वाले हैं। उनकी कृपा के अभाव में हमारे कार्य पूर्ण नहीं होते- यस्माद्ृते न सिद्धयति यज्ञो विपश्चितश्न। स: विश्वा धामानि भुवनानि वेद- वह प्रभु हमारे सभी लोको, नाम-स्थान-जन्मों को जानता है। धाम का अर्थ नाम स्थान जन्म है। नि.-९-२८

उपर्युक्त तीन खंडों में परमात्मा के साथ हमारे तीन प्रकार के संबंधों का वर्णन है-१. स नो बन्धु :-भगवान हमारे बंधु है और अच्छे मित्र की तरह, हमें संमार्ग पर, उन्नति के पथ पर अग्रसारित करते हैं। २. प्रभु हमारे जन्म देने वाले ' स नो जनिता' और ३. हमारे विधाता 'स विधाता' हमारे कर्मों को पूर्ण करने वाले हैं। सो, इस प्रकार (क) जन्म देना, (ख) सफलता उन्नति के मार्ग पर चलाना और (ग) हमारे कामों को पूर्ण करना, ये तीन प्रभु के काम हुए।

(शेष अगले अंक में)

OO

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जाए।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221, 7011279734

गोरक्षा का प्रश्न उठा ही क्यों?

यशपाल आर्य, देहरादून

गोरक्षा पर उठने वाले प्रश्नों के उत्तर देने से पहले यह आवश्यक है कि गोरक्षा के प्रश्न की कुछ जानकारी प्राप्त कर ली जाय।

1. उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद के पास एक पुरानी मुसलमानी रियासत थी जो अब पृथक रामपुर जिला बन चुकी है। नगर पालिका के रजिस्टरों के अनुसार अंग्रेज के जमाने में रामपुर नगर में गो मांस बेचने के लिए दुकानदारों को लाइसेंस दिये जाते थे। 1938 में गोमांस बेचने के लिए 14 लोगों को लाइसेंस दिये गये थे। 1940 में गोमांस बेचने के लिए 20 लोगों को लाइसेंस दिये गये थे।

1952 में मेरठ उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कांग्रेसी श्री विश्वम्बर सहाय प्रेमी ने यह संख्या 231 बताई थी–ला. हरदेव सहाय का कहना था 237 लाइसेंस दिये गये हैं।

2. रामपुर रेलवे स्टेशन से गाय की खालें बाहर भेजी गई। रेलवे स्टेशन से बनी बिल्टियों से यह तथ्य प्रकट हुआ कि 6000 गाय की खालें प्रतिमाह रेलवे स्टेशन द्वारा बाहर भेजी गई– जो एक वर्ष में 72000 बनती हैं।

छकड़ों, बैल गाडियों, ट्रकों, ऊंटों से कितनी खालें बाहर भेजी गई उसके आंकड़े हमारे पास नहीं हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि कम से कम 72000 गाय की खालें प्रतिवर्ष अकेले रामपुर नगर से रेल मार्ग द्वारा बाहर जाती रहीं।

खालें जमीन से घास-फूस की तरह नहीं उगती। न आम, आमरूद की तरह पेड़ों पर लगती है। वर्षा में, बरसात के साथ भी खालें, नहीं बरसती। गाएं मारी या काटी जाती हैं तब खालें प्राप्त होती हैं। खालों का निर्यात 1940 की तुलना में 1952 में 18 गुना हो गया।

3. 1973 में सरकार ने जनता के विरोध के बावजूद देवनार (बंबई) में 300 एकड़ की विशाल भूमि में एक बूचड़खाना स्थापित किया। वहां सप्ताह में दो दिन पशु कटते हैं। बताया गया कि प्रथम वर्ष में 1255 गाय, बैल काटे गये। 1975 के वर्ष में 4200 गाय, बैल काटे गये। 1977 के वर्ष में 5000 गाय, बैल गाये गये। इस बूचड़खाने की क्षमता 600 पशु प्रतिदिन काटने की है। अर्थात् 187200 पशु प्रतिवर्ष। 1980–81 में 121656 बैल काटे गये।

1985 में प्रतिदिन 320 से 400 बैल काटे गये। वर्ष में 115200 से 14400 के बीच। 50 से 60 भैंस काटी गई, यानी 18000 और 21000 के बीच केवल देवनार में औसतन 15 लाख भेड़, बकरियां, 20 हजार भैंसे और सवा लाख बैल प्रतिवर्ष काटे जाते हैं।

4. केवल गोमांस ही नहीं- गाय का चमड़ा भी बड़ी तादाद में विदेशों को भेजा गया। 1965–66 में 28 करोड़ रुपये का गोचर्म बाहर भेजा गया। 1979–80 में 425 करोड़ रुपये का गोचर्म देश मे बाहर भेजा गया।

आप यह जानकर हैरान होगें कि यह गोमांस या गोचर्म बूढ़े–अपंग और अपाहिज पशुओं को काटकर नहीं प्राप्त किया जाता। इसके लिए स्वस्थ और जवान गाय, बैल मारे जाते हैं। यह सत्य है कि बूचड़खाने में पशुवध से पहले डाक्टर से इस आशय का प्रमाण पत्र लेना होता है कि काटा जाने वाला पशु अपंग है, वृद्ध है, नकारा है। परंतु वास्तविकता इतनी ही है कि उस समय इस विशाल बूचड़खाने में केवल चार डाक्टर नियुक्त थे। एक डाक्टर एक दिन में अधिक से अधिक 50 पशुओं की जांच कर सकता है। चार डाक्टर अधिक से अधिक प्रतिदिन 200 पशुओं की जांच कर सकते हैं। परंतु रिकार्ड से यह स्पष्ट है कि प्रमाण पत्र प्रतिदिन 550 पशुओं को दिये गये। घूस और रिश्वत के बल पर स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट और जवान निरीह पशु काटे जाते रहे। आप यह पूछ सकते हैं-काटने वाले बूढ़े और नकारा पशु क्यों नहीं काटते? जवान पशु को क्यों काटते हैं?

आप यह जानकर हैरान होगें कि यह गोमांस या गोचर्म बूढ़े-अपंग और अपाहिज पशुओं को काटकर नहीं प्राप्त किया जाता। इसके लिए स्वस्थ और जवान गाय, बैल मारे जाते हैं। यह सत्य है कि बूचड़खाने में पशुवध से पहले डाक्टर से इस आशय का प्रमाण पत्र लेना होता है कि काटा जाने वाला पशु अपंग है, वृद्ध है, नकारा है। परंतु वास्तविकता इतनी ही है कि उस समय इस विशाल बूचड़खाने में केवल चार डाक्टर नियुक्त थे। एक डाक्टर एक दिन में अधिक से अधिक 50 पशुओं की जांच कर सकता है। चार डाक्टर अधिक से अधिक प्रतिदिन 200 पशुओं की जांच कर सकते हैं। परंतु रिकार्ड से यह स्पष्ट है कि प्रमाण पत्र प्रतिदिन 550 पशुओं को दिये गये। घूस और रिश्वत के बल पर स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट और जवान निरीह पशु काटे जाते रहे। आप यह पूछ सकते हैं-काटने वाले बूढ़े और नकारा पशु क्यों नहीं काटते? जवान पशु को क्यों काटते हैं?

संसार के प्रत्येक देश में मांसाहारियों के कारण पशुओं की संख्या भयंकर रूप से घट गई है। परिणामतः संसार भर में मांस के दाम आकाश छू रहे हैं। और उससे भी बड़ी बात यह हुई है कि मांस निरंतर अप्राप्य होता जा रहा है। यही कारण है कि तरह-तरह के हीले बहाने बनाकर गो आदि कल्याणकारी पशुओं का वध भारत सरीखें देश में होने लगा है। और रुपया कमाने की हवस में पागल मनुष्य अब पशु वंश को समाप्त करने पर उतारू है। मैं तो सोचता हूं यह मानव जिसे मांसाहार का चस्का लग गया है- कल तक बकरें, भेड़े खाता था, मुर्गियां, कबूतर चबाता था- मेढ़क मछलियां निगलता था- आजकल भैंसे खाने लगा है, तो कल वह दिन निश्चय आयेगा जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का मांस ऐसे खायेगा जैसे आज वह पशुओं को खाता है। भारत-पाक सीमा का आज यह हाल है कि फंडर गाय और नकारा बैल का फिक्स रेट है- एक पशु दो इतना सोन लो परिणामतः हजारों पशु-तस्करों द्वारा केवल काटने के लिए पाकिस्तान भेजा जा रहे हैं।

हम निवेदन करेंगे बूढ़े पशुओं का मांस इतना स्वादिष्ट नहीं है कि जैसा जवान गाय-बैल का। कोमल गोवत्सों की चमड़ी कितनी निर्दयता से उतारी जाती है। यह जानकर आप कांप उठेंगे। यहां तक हुआ है कि गायों के मासूम बच्चों को गरम-गरम खौलते हुए फब्बारों के नीचे खड़ा करके उन पर उबलते पानी की बौछार कराई गयी और जब खाल पर छाले उभर आए तो उस जीवित पशु की उभरी खाल को पतली-पतली छड़ियों से पीटा गया ताकि वह खाल और उभर जाए तब वह खाल सोने की तरह कीमती हो जाती है। इसका मूल्य बूढ़े बैल-गायों से बीसियों गुना अधिक हो जाता है।

संसार के प्रत्येक देश में मांसाहारियों के कारण पशुओं की संख्या भयंकर रूप से घट गई है। परिणामतः संसार भर में मांस के दाम आकाश छू रहे हैं। और उससे भी बड़ी बात यह हुई है कि मांस निरंतर अप्राप्य होता जा रहा है। यही कारण है कि तरह-तरह के हीले बहाने बनाकर गो आदि कल्याणकारी पशुओं का वध भारत सरीखें देश में होने लगा है। और रुपया कमाने की हवस में पागल मनुष्य अब पशु वंश को समाप्त करने पर उतारू है। मैं तो सोचता हूं यह मानव जिसे मांसाहार का चस्का लग गया है- कल तक बकरें, भेड़े खाता था, मुर्गियां, कबूतर चबाता था- मेढ़क मछलियां निगलता था- आजकल भैंसे खाने लगा है, तो कल वह दिन निश्चय आयेगा जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का मांस ऐसे खायेगा जैसे आज वह पशुओं को खाता है। भारत-पाक सीमा का आज यह हाल है कि फंडर गाय और नकारा बैल का फिक्स रेट है- एक पशु दो इतना सोना लो परिणामतः हजारों पशु-तस्करों द्वारा केवल काटने के लिए पाकिस्तान भेजे जा रहे हैं।

प्रश्न 4 सरकार तो कहती है- भारत में पशुओं की संख्या करोड़ों में है। स्वस्थ पशुओं का भोजन ये नकारा पशु खा जाते हैं।

उत्तर 5 हमारा निवेदन है कि ऐसी बातें वे लोग करते हैं जो लोगों को बहकाना चाहते हैं वे वास्तविकता को छिपा देना चाहते हैं।

न्यूजीलैंड में प्रति 100 मनुष्यों की आबादी के पीछे दूध देने वाले पशु 281 हैं। आस्ट्रेलिया में प्रति 100 मनुष्यों की आबादी के पीछे दूध देने वाले पशु 256 हैं। अर्जेंटाइना में प्रति 100 मनुष्यों की आबादी के पीछे दूध देने वाले पशु 161 हैं। डेनमार्क में प्रति 100 मनुष्यों की आबादी के पीछे दूध देने वाले पशु 62 हैं। और भारत में प्रति 100 मनुष्यों की आबादी के पीछे 1951 में मात्र 55 दुधारू पशु थे। अमर उजाला 4-6-1998 के अनुसार 1998 में 100 आदमियों के पीछे मात्र 15 पशु रह गये हैं।

पशुओं की संख्या करोड़ों में बताकर लोगों को बहकाया जाता है। हम पूछते हैं कि 100 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में गाय आदि पशुओं की संख्या करोड़ों में नहीं होगी तो क्या इकाई-दहाई में होगी? सवाल यह है कि 100 व्यक्ति के लिए कितने दुधारू पशु हैं?

क- वह सरकार जिसने गाहे बगाहे लाखों मन चारा विदेशों को ऐक्सपोर्ट किया है उसके मुख से चारे की कमी का आक्षेप जंचता नहीं है।

ख- पिछले दिनों हरियाणा में अंगूर का भरपूर उत्पादन होने लगा। अंगूर की भयंकर पैदावार हुई। तब आपने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा हरियाणा सरकार ने घोषणा की थी इस अंगूर की शराब बनाएंगे। सरकारी मानसिकता का इससे बढ़िया उदाहरण और क्या हो सकता है।

प्रतिवर्ष लाखों एकड़ भूमि में जौ बोया जाता है- जो केवल शराब बनाने के काम आता है। इसी भूमि पर गेहूं बोया गया होता तो लाखों मन अनाज मनुष्यों के भोजन के लिए मिलता और लाखों टन चारा पशुओं को मिलता। पर सरकार तो शराब का उत्पादन करेगी- उसे धन चाहिए जो शराब से मिलता है- गो दूध से नहीं मिलता।

ओ३म्!! ○○

मूर्तिपूजा के इतिहास पर महर्षि दयानन्द का उपदेश

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

एक द्रविड़ देश के ब्राह्मण काशी में आये और यहां एक गौड़पाद पंडित के रूप में प्रसिद्ध हो गये। उनके पास व्याकरण वेद पर्यंत विद्या पढ़ी थी जिसका नाम शंकराचार्य था। वह बड़े पंडित हुए थे, उन्होंने विचार किया कि यह बड़ा अनर्थ हुआ कि नास्तिकों का मत आर्यावर्त्त देश में फैल गया है और वेदादिक संस्कृत विद्या का प्राय: नाश ही हो गया है, अत: नास्तिक मत का खंडन और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्या का (मंडन होना चाहिए)।

वह अपने मन से ऐसा विचार करके सुधंवा नाम के राजा के पास चले गए, क्योंकि बिना राजाओं के सहाय से यह बात नहीं हो सकेगी। वह सुधंवा राजा भी संस्कृत में पंडित था और जैनों के भी संस्कृत के सब ग्रन्थों को पढ़ा था। सुधंवा जैन के मत का था, परन्तु बुद्धि और विद्या के होने से अत्यंत विश्वास नहीं था, क्योंकि वह संस्कृत भी पढ़ा था और उसके पास जैन मत के पंडित भी बहुत थे। फिर शंकराचार्य ने राजा से कहा कि आप सभा करावें और उनसे मेरा शास्त्रार्थ हो और आप सुनें। फिर जो सत्य हो उसको मानना चाहिए। उसने स्वीकार किया और सभा भी कराई।

उसके अपने पास जैन मत के पंडित थे और भी दूर-दूर से पंडित जैन मत के बुलाए, फिर सभा हुई। उसमें यह प्रतिज्ञा हो गई कि हम वेद और वेद मत का स्थापन करेंगे और आपके मत का खंडन तथा उन पंडितों ने ऐसी प्रतिज्ञा की कि वेद और वेदमत का हम खंडन करेंगे और अपने मत का मंडन। सो उनका परस्पर शास्त्रार्थ होने लगा। उस शास्त्रार्थ में शंकराचार्य की विजय हुई और जैन मत वाले पंडितों का पराजय हो गया। फिर कोई युक्ति जैनों की नहीं चली, किन्तु शंकराचार्य ने कहा कि जैनों का आजकल बड़ा बल है और वेद मत का बल नहीं है। इससे शास्त्रार्थ तो हम करने को तैयार हैं, परन्तु कोई उपाधि करे अथवा शास्त्रार्थ ही न करें, तो हमारा कुछ बल नहीं।

इसमें आप लोग प्रवृत्त होंवे कि कोई अन्याय करे, उसकी आप लोग शिक्षा करें। सो राजा ने उस बात को स्वीकार किया कि वह हम करेंगे, परन्तु हमारे छह राजा संबंधी हैं, उनके पास हम चिट्ठी लिखते हैं और आपको भी शास्त्रार्थ करने के हेतु भेजेंगे। फिर वह भी यदि मिल जायें तो बहुत अच्छी बात है। फिर शंकराचार्य उन राजाओं के पास गए और सभा हुई, फिर जैन मत के पंडितों का पराजय हो गया। फिर वे छह भी सुधंवा से मिले ओर सबकी सम्मति से संस्कार भी हुआ तथा वेदोक्त कर्म भी करने लगे।

तब तो आर्यावर्त्त में सर्वत्र यह बात प्रसिद्ध हो गई कि एक शंकराचार्य नामक संन्यासी वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने वाले बड़े पंडित हैं जिससे बहुत

शंकराचार्य, सुधंवादि राजा तथा और आर्यावर्तवासी श्रेष्ठ लोगों ने विचार किया कि विद्या का प्रचार अवश्य करना चाहिए। वह विचार ही करते रहे।

इतने में 32-33 बर्ष की उम्र में शंकराचार्य का शरीर टूट गया। उनके मरने से सब लोगों का उत्साह भंग हो गया। यह भी आर्यावर्त देशवालों का बड़ा अभाग्य था, यदि शंकराचार्य दश वा बारह बरस भी और जीते तो विद्या का प्रचार यथावत् हो जाता। फिर आर्यावर्त की ऐसी दुर्दशा कभी नहीं होती, क्योंकि जैनों का खंडन तो हो गया, परन्तु विद्या प्रचार यथावत् नहीं हुआ। इससे मनुष्यों को यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्य का निश्चय नहीं होने से मन में संदेह ही रहा। कुछ तो जैनों के मत का संस्कार हृदय में रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रों का भी। यह बात इक्कीस या बाइस सौ बरस पूर्व की है। इसके पीछे 200-300 वर्षों तक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा। फिर उज्जैन में विक्रमादित्य राजा कुछ अच्छा हुआ। उसने राजधर्म का कुछ-कुछ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्याय से होने लगे थे। उसके राज्य में प्रजा को सुख भी मिला था, क्योंकि विक्रमादित्य तेजस्वी, बुद्धिमान्, शूरवीर तथा धर्मात्मा था, इससे कोई और अन्याय नहीं करने पाता था।

जैन लोगों के पंडित परास्त हो गए। फिर उन सात राजाओं ने शंकराचार्य की रक्षा के हेतु बहुत भृत्य तथा सेवक और सवारी भी रख दी और सबने कहा कि आप सर्वत्र आर्यावर्त में भ्रमण करे और जैनों का खंडन करें। इसमें यदि कोई अन्याय से जबर्दस्ती करेगा तो उसको हम लोग समझा लेवेंगे। फिर शंकराचार्य जी ने जहां-जहां जैनों के पंडित और अत्यन्त प्रचार था, वहां-वहां भ्रमण किया और उनसे सर्वत्र शास्त्रार्थ किया।

शास्त्रार्थों में सर्वत्र जैन लोगों का पराजय ही होता गया, क्योंकि दो तीन दोष उन (जैनियों) के बड़े भारी थे। एक तो ईश्वर को नहीं मानना, दूसरा वेदादिक सत्य शास्त्रों का खंडन करना और तीसरा जगत् स्वभाव ही से होता है, इसका रचने वाला कोई नहीं, इत्यादि अन्य भी बहुत दोष हैं, उन दोषों को जैन मत के खंडन-मंडन में विस्तार से कहेंगे। फिर जितनी जैनों के मंदिर में मूर्तियां थी, उनको सुधन्वादिक राजाओं ने तोड़वा डाली और कुवों में डलवा दी वा पृथ्वी में गाड़ दी, सो आज तक जैनों की वे टूटी और बिना टूटी मूर्तियां पृथ्वी खोदने से निकलती हैं। परन्तु मन्दिर नहीं तोड़े गए, क्योंकि शंकराचार्य और राजा लोगों ने विचार किया कि मंदिरों को तोड़ना उचित नहीं है। इनमें वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने के हेतु पाठशाला करेंगे, क्योंकि लाखों करोड़ों रुपये की इमारतें हैं, इसको तोड़ना उचित नहीं। और कुछ-कुछ गुप्त रूप से जैन लोग जहां-तहां रह गए थे सो आज तक देखने में आर्यावर्त देश में आते हैं। इसके बाद सर्वत्र वेदादि ग्रंथों के पढ़ने और पढ़ाने की इच्छा बहुत मनुष्यों को हुई। शंकराचार्य, सुधंवादि राजा तथा और आर्यावर्तवासी श्रेष्ठ लोगों ने विचार किया कि विद्या का प्रचार अवश्य करना चाहिए। वह विचार ही करते रहे। इतने में 32-33 वर्ष की उम्र में शंकराचार्य का शरीर टूट गया।

उनके मरने से सब लोगों का उत्साह भंग हो गया। यह भी आर्यावर्त देशवालों का बड़ा अभाग्य था, यदि शंकराचार्य दश वा बारह बरस भी और जीते तो विद्या का प्रचार यथावत् हो जाता। फिर आर्यावर्त की ऐसी दुर्दशा कभी नहीं होती, क्योंकि जैनों का खंडन तो हो गया, परन्तु विद्या प्रचार यथावत् नहीं हुआ। इससे मनुष्यों को यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्य का निश्चय नहीं होने से मन में संदेह ही रहा। कुछ तो जैनों के मत का संस्कार हृदय में रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रों का भी। यह बात इक्कीस या बाइस सौ बरस पूर्व की है। इसके पीछे 200-300 वर्षों तक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा। फिर उज्जैन में विक्रमादित्य राजा कुछ अच्छा हुआ। उसने राजधर्म का कुछ-कुछ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्याय से होने लगे थे। उसके राज्य में प्रजा को सुख भी मिला था, क्योंकि विक्रमादित्य तेजस्वी, बुद्धिमान्, शूरवीर तथा धर्मात्मा था, इससे कोई और अन्याय नहीं करने पाता था। परन्तु वेदादिक विद्या का प्रचार उसके राज्य में भी यथावत् नहीं होता था। उसके पीछे ऐसा राजा नहीं हुआ, किन्तु साधारण होते रहे। फिर विक्रमादित्य से 500 वर्ष के पीछे राजा भोज हुए। उसने संस्कृत का प्रचार किया, अत: नवीन ग्रन्थों की रचना और प्रचार किया था वेदादि ग्रन्थों का नहीं।

परन्तु कुछ-कुछ संस्कृत का प्रचार राजा भोज ने ऐसा कराया था कि चांडाल और हल जोतने वाले भी कुछ लिखना-पढ़ना और संस्कृत भी बोलते थे। देखना चाहिए कि कालिदास गड़रिया था, परन्तु श्लोकादिक रच लेता था और राजा भोज भी नये-नये श्लोक रचने में कुशल था। कोई एक श्लोक भी रच के उनके पास ले जाता था, उसका प्रसन्नता से सत्कार करता था और जो कोई ग्रंथ बनाता था तो उसका बड़ा भारी सत्कार करता था। फिर बहुत मनुष्य लोग लोभ से नए ग्रन्थ रचने लगे, उससे वेदादिक सनातन पुस्तकों की अप्रवृत्ति प्राय: हो गई। ○○

प्रेरक विचार

- परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करने से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि पर्वत के समान दुख प्राप्त होने पर भी वह नहीं घबराएगा।
- जब तक शरीर निरोग और स्वस्थ है बुढ़ापा दूर है। इंद्रियों की शक्ति कम नहीं हुई और आयु भी क्षीण नहीं है। तभी तक अपने कल्याण के लिए जितना हो सके प्रभु भक्ति कर लें अन्यथा बुढ़ापे में भजन आरम्भ करना तो घर में आग लगने पर कुआं खोदने वाली बात हो जाएगी।
- ईश्वर ने हम लोगों को जो कुछ भी दिया है वह बटोर कर रखने के लिए नहीं, अपितु जरूरतमंद योग्य पात्रों को देने के लिए है।

आदर्श हो देश की राजनीति

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

देश में हो रहे लोकसभा के चुनावों की स्थिति को देखते हुए यह ज्ञात होता है कि राजनीति में झूठ और भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है। हमारे देश की राजनीतिक पार्टियां आदर्श और सत्यवादिता की बात तो करती हैं लेकिन सत्ता प्राप्त होते ही सब भूल जाती हैं। जबकि देश की दिशा और दशा को सुधारना ही हर राजनेता और राजनैतिक पार्टी की जिम्मेदारी है।

देश सभी का है चाहे वह किसी धर्म, जाति, पार्टी या समाज का व्यक्ति है। इसलिए सभी को संविधान के अनुसार देश और राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए कार्य करना चाहिए। हमारे देश की जनता को लोग बड़े-बड़े वादों के आधार पर जाति के अनुसार बहलाकर वोट तो डलवा लेते हैं। लेकिन अपने वादों को भुला देते हैं।

हमारे जन प्रतिनिधियों को सिर्फ अपना, अपने साथियों और परिवार के सदस्यों का हित दिखाई देता है। इससे भी ज्यादा हालात ऐसे हैं कि जिन धनी लोगों ने चुनाव में उन्हें पैसा दिया वे देशहित को न देखते हुए उन्हें फायदा पहुंचाते हैं। देश की महत्वपूर्ण धरोहर को भी ऐसे राजनेता अपने बाप की जागीर समझकर सस्ते दामों में दे देते हैं। लेकिन उन्हें याद नहीं आता अपने महापुरुषों का जीवन जिन्होंने राष्ट्र व देशहित के लिए अपने राज सुख को छोड़कर देश व राष्ट्र सी सेवा की। देश के लिए घास की रोटी खाकर, भूखे-प्यासे रहकर लड़ाइयां लड़ीं, अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया।

जिन लोगों की राजनीति मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि महान पुरुषों के नाम पर चलती है, उन्हें महाराजा राम से ही यह सीख लेनी चाहिए कि उन्होंने प्रजा.हत के लिए अपनी पत्नी को भी वन में भेजकर राजधर्म निभाया था। लेकिन आज के राजनेता अपने आपको आदर्श तो बताते हैं लेकिन अपने और अपने परिवार के लिए देश को बेच देने की बात करते हैं। ऐसा आर्यों का देश, जहां की संस्कृति और सभ्यता वेदों पर आधारित है। जहां के राजा ये कहा करते थे मेरे आर्यावर्त्त देश अथवा राज में कोई चोर और व्यभिचारी नहीं है। ऐसा आदर्श स्थापित करने वाली देश की प्राचीन राजनीति सम्पूर्ण विश्व के लिए उदाहरण स्वरूप है। आज सम्पूर्ण विश्व और भारत देश को वेद के बताये मार्ग पर चलकर पथभ्रष्ट राजनीति को खत्म कर एक उच्च और श्रेष्ठ चरित्रवान राष्ट्र का निर्माण करने की आवश्यकता है। तभी हम विश्वगुरु, महाशक्तिशाली और आदर्श बन सकते हैं।

आदर्श राजनेता और हमारा लोकतंत्र : राजनीति, इस शब्द का पहले अलग महत्व था, आज इसके अलग मायने हैं और शायद आगे इसका कोई और रूप होगा, लेकिन वर्तमान राजनीति की एक खास बात ये हैं की आप इस विषय में रूचि लें या न लें इसका आप पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव ज़रुर रहता है। राजनीति शब्द से दो और शब्द निकलते हैं- राजनेता और राजनीतिज्ञ, वैसे तो ये दोनों शब्द पर्यायवाची लगते हैं लेकिन अगर इसका थोड़ा और गहरा विश्लेषण करें तो आपको इनमें थोड़ा अंतर नज़र आएगा। एक अच्छा राजनीतिज्ञ एक अच्छा राजनेता हो सकता है लेकिन एक राजनेता ज़रुरी नहीं है की एक अच्छा राजनीतिज्ञ हो। इस बात को आसान भाषा में ऐसे समझ सकते हैं- कलाकार तीन तरीके के होते हैं, एक वो जो शारीरिक रूप से सुन्दर होते हैं और कला का उन्हें कम ज्ञान होता है। दूसरे वो कलाकार होते हैं जो शारीरिक रूप से उतने आकर्षक तो नहीं होते लेकिन कला का उन्हें काफी ज्ञान होता है। एक तीसरी प्रजाति के भी कलाकार होते हैं जो दिखने में भी ठीक ठाक होते हैं और उन्हें कला का भी ठीक ठाक ज्ञान होता है। इसी प्रकार होते हैं राजनेता, कुछ ऐसे हैं जिनकी सामाजिक छवि तो बहुत अच्छी है मगर राजनीति का कम ज्ञान है। कुछ वो हैं जिन्हें राजनीति तो अच्छी आती है मगर उनकी सामाजिक छवि उतनी अच्छी नहीं है, और कुछ ऐसे भी हैं जिनकी छवि भी ठीक ठाक है और राजनीति भी ठीक ठाक कर लेते हैं। लेकिन एक अच्छे राजनेता के लिए सिर्फ ये दो पैमाने काफी नहीं हैं, एक राजनेता के पास सामाजिक छवि और राजनैतिक कौशल के अलावा साहस, आत्मविश्वास, वचनबद्धता, स्वाभिमान, मर्यादा, त्याग, बलिदान, आत्मसम्मान और न जाने कितनी योग्यताओं की जरुरत होती है।

गीता-माहात्म्यम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

इह सकल-कला-कलाप-कलितस्य भारतवर्षस्य पवित्रतमे भूभागे धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे पुरषोत्तमेन भगवता श्रीकृष्णेन प्रणीता गीता कस्य श्रेयसे प्रेयसे न भवति। धर्माचरणप्रवीणैः धर्मतत्व-वेदिभिः, गम्भीर-चिंतन शीलैस्तत्वदर्शिभिः, सततकर्मशीलैः कर्मयोगिभिः, प्राणि शास्त्र-प्रवीणैः विपश्चिद्भिः, शास्त्रज्ञैर्म-नीषिभिश्च समादृतेयं गीता सर्वलोकेषु समस्त शास्त्रेषु च श्रेष्ठा प्रेष्ठा वंदनीया पूजनीया च शोभते।

पुण्यक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे यद्धाय सज्जीभूय समुपस्थितयोः कौरव-पाण्डवयोः सेनयोरुभयोरन्तराले किंकर्त्तव्यता-विमूढस्य कर्त्तव्य पथ भ्रान्तस्य व्यामोहाकुलितान्तः करणस्य कुंतीपुत्रस्य अर्जुनस्य ज्ञानालोकेन मोहान्धकारं निरस्यसन्मार्गप्रवृत्तये वेदोपनिषदां सरहस्यं सारमादाय साक्षाद्गभगवतैवोपदिष्टम् इदम् अध्यात्मसाधकं गीताज्ञानामृतम्। इदं हि ज्ञानामृतं शोकानलसन्तप्तानां सुख-शान्तिकरम् व्यामोह रोगस्य महौषधम्, कर्त्तव्यमार्गात् परिभ्रान्तानां सन्मार्गम्, मोहितान्तः करणानाम् उद्बोधनम्, संसार सागरनिमग्नानां संतितीर्षूणां सन्तरणसेतुश्च अस्ति। सर्वजनसुखाय सर्वजनहिताय च प्रतिपादितेयं भारतामृत-सर्वस्वं गीता भगवता। उक्तं च यथा-

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनंदनः। पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

अस्मिन्महामोहमये जगति मोहार्णवे परिपतितानां समुद्विग्नानां जनानां सन्तापहारकत्वम् उक्तं गीतया। दुःखमयं हि जगत्। दुःखनिवृत्तिश्च जीवनस्य लक्ष्यम्। अध्यात्मशास्त्रचिन्तनेन च दुःखनिवृत्तिर्भवति। गीतायाम् अध्यात्मशास्त्रविवेचनं सम्यक्तयो पलभ्यते। तच्च अध्यात्मशास्त्रं शोकसन्तप्तान् जडान् सान्त्वयति, अत एव अध्यात्मतत्व प्रतिपादिकायाः सर्वज्ञानमय्याः गीतायाः श्रवणं मननमध्ययनं चावश्यं करणीयमिति।

लोके हि प्रवत्तिः निवृत्तिश्चेति द्वौ मार्गावुक्तौ, तत्र निवृत्ति मार्ग प्रतिपादनं गीतायाः लक्ष्यमिति शंकराचार्यस्य मतम्। श्रीतिलक-महोदयानां मतमस्ति यद्गीतायाः लक्ष्यं प्रवृत्तिमार्गस्य कर्मयोगस्य प्रतिपादनमिति। वस्तुतस्तु गीतायां भक्ति ज्ञान-कर्म ध्यान संन्यासादीनां सर्वेषां मार्गाणां समन्वयात्मकं विवेचनं विद्यते।

गीतायां परब्रह्मणि परमात्मनि तादात्म्यैकत्वानु-भवनं ज्ञानमुक्तम्। फलेष्वनासक्तः सन् स्वकर्माचरणं 'कर्मयोग' उच्यते। कर्मफलस्य परित्यागपूर्वकं निष्कामभावेन स्वकर्मानुष्ठानं श्रेयस्करम् उक्तम्।

गीतायां भक्तियोगस्य सवयोगेषु श्रेष्ठत्वमुक्तम्, किन्तु गीताया भक्तिः भिन्ना सर्वाभ्यो भक्तिभ्यः। अत्र च परमात्मनः प्रसादनार्थ 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' इति गीतोक्त्यनुसारेण सर्वान् धर्मान् सर्वाणि कर्मफलानि च परित्यज्य सर्वेषां कर्मणां परमगुरौ परमेश्वरे समर्पणं शरणागति-प्राप्तिश्च परमा भक्तिरुच्चयते। एवं च यमनियमादिभिः पावनीभूतस्य चित्तस्य परमात्मनः सेवायां समर्पणं ध्यानयोग उच्चयते।

अत्र च 'संन्यास' शब्दार्थः कर्मफलस्य परित्यागोऽस्ति। एवं च समस्त कर्म फलानि संन्यस्य स्त्रीयं कर्तृत्वाभिमानं परित्यज्य अनन्येन ध्यानेन ध्यायन्तः परमा भवत्योपेताः 'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः' इति भक्तिमार्ग साधकस्य समत्व-योगस्य समदर्शितायाश्च आश्रयणेन सर्वधर्मपरित्यागपूर्वकं भगवतः परमेश्वरस्य शणागतितः परमं पदं लभन्ते मानवः। यथा चोक्तम्-

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्यस्य मत्पराः। अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते॥ तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि न चिरात् पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥

एवं वै निष्कामकर्मयोगस्य महत्वं निर्दिशान्ति, भक्तिपीयूषस्य धारां प्रवाहयन्ती, कर्त्तव्यमार्गम् उपदिशन्ती, जीवन संदेश दात्री चेयं गीता सामाजिका-चारविचारमपि निर्दिशति। समाजस्य लोकस्य सुखकराणि कल्याणकराणि क्षेमकराणि च कर्त्तव्यानि कर्माणि चोपदिशन्त्या तया चातुर्वर्ण्णस्य पृथक-पृथक कर्माणि निर्दिष्टानि। यथा च-

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक-पृथक॥

एवं च सर्वेषां शास्त्राणां सारभूता, नवनीतकल्पा, रसदा, सुखदा, कर्त्तव्यपथप्रदर्शिका स्वल्पकलेवरापि सुगीता गीता 'सर्वशास्त्रमयी' प्रतिपादिता। अत एव सर्वाणि शास्त्राण्यतिशेते गीता। अस्याः सम्यगध्ययने श्रवणे मनने च कृतेऽन्यशास्त्राणाम् अध्ययन-श्रवण मननादिकस्य आवश्यकता नास्ति। यथा चोक्तम्- **गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिर्गता॥**

महान क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल'

डॉ. मदन लाल वर्मा 'क्रांत'

इस संसार में अब तक अनगिनत आत्मकथाएं लिखी जा चुकी हैं तथा आगे भी लिखी जाती रहेंगी परंतु शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा जैसा गौरव शायद ही किसी को प्राप्त हो। इसका कारण निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है- '19 दिसम्बर 1927 ई. पौष कृष्ण 11 संवत् 1984 विक्रमी प्रातः साढ़े छह बजे इस शरीर को फांसी पर लटका देने की तिथि निश्चित हो चुकी थी। इस कोठरी में सुयोग प्राप्त हो गया है कि अपनी कुछ अंतिम बातें लिखकर देशवासियों को अर्पण कर दूं।

संभव है मेरे जीवन के अध्ययन से किसी आत्मा का भला हो जाय।' काल कोठरी में बैठकर, फांसी लगने से मात्र कुछ घंटे पहले तक, उन्होंने आत्मकथा लिखकर एक इतिहास बना डाला तथा लिख भी डाला। धन्य हैं ऐसे वीर-मृत्यु के भय को जीत लेने वाले- ए भारत के नौजवान साथियों! क्या ये शहीद हमारे आदर्श नहीं होने चाहिए? आओ अब इस देश भक्त नौजवान के जीवनामृत का आचमन करें तथा उसके विचारों की कथा को श्रद्धाभाव से हृदयंगम करें।

जन्म तथा शिक्षा : क्रांतिकारी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 11 संवत् 1954 विक्रमी (4 जून 1897 ई.) को शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर व माता का नाम श्रीमती मूलमती देवी था। प्रारम्भ में आपके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। आपके पिताजी ने एक दो साल म्यूनिसिपैलिटी की नौकरी की तत्पश्चात् कचहरी में स्टाम्प बेचने लगे। फिर रुपये का लेनदेन भी करने लगे। बिस्मिल जी का एक बड़ा भाई भी था

4 जून जन्म दिवस पर विशेष

जिसका बचपन में ही निधन हो गया। बिस्मिल जी के पश्चात पांच बहनों और तीन भाइयों का भी जन्म हुआ। जब आप सात वर्ष के थे तब आपके पिताजी ने उन्हें हिंदी अक्षरों का बोध कराया तथा एक मौलवी साहब के मकतब में उर्दू पढ़ने भेज दिया। बचपन में आप बहुत शरारती थे। पांचवीं कक्षा में पढ़ते समय आपको घर से पैसे चुराने, सिगरेट व भांग पीने तथा उपन्यास पढ़ने की लत लग गई थी।

आर्यसमाज के विचारों का जीवन में परिवर्तन : आपके घर के पास ही देवमंदिर था, आपको उसके पुजारी ने ब्रह्मचर्य पालन व पूजा पाठ का उपदेश दिया। आर्यसमाज के मुंशी इंद्रजीत जी ने आपको संध्या करने का उपदेश दिया तथा सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ पढ़ने को दिया। उसे पढ़कर आपका जीवन पूर्णतः बदल गया। सारी बुरी आदतें छूट गई तथा जीवन सदाचार से आलोकित हो गया। आप कट्टर आर्य-समाजी बन गए। आर्यसमाजी विद्वान स्वामी सोमदेव को आप अपना गुरू मानते थे। आपको राजनैतिक उपदेश दिया तथा स्वदेश हित में क्रांतिकारी बनने की प्रेरणा दी। देवतास्वरूप भाई परमानंद की फांसी की सजा सुनकर आपने अंग्रेजी राज्य को ध्वस्त करने की प्रतिज्ञा की।

काकोरी कांड व फांसी : आपने अपनी आत्मकथा में क्रांतिकारी दल बनाने, नौजवानों को संगठित करने, क्रांतिकारी कार्यो व अस्त्र-शस्त्रों के लिए पैसा एकत्र करने संबंधी विवरण विस्तारपूर्वक दिए हैं। दल की आर्थिक दशा सुधारने हेतु क्रांतिकारी नौजवानों ने 9 अगस्त 1925 को काकोरी स्टेशन के पास रेलगाड़ी में से सरकारी खजाना लूट लिया। एक साथी की गद्दारी के कारण 25 दिसम्बर को तथा आपको अन्य साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। 17 दिसम्बर 1927 को श्री राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को गोंडा जेल में तथा श्री बिस्मिल को गोरखपुर जेल में, श्री अशफाक को फैजाबाद में व श्री रोशन सिंह को इलाहाबाद जिला जेल में फांसी पर लटका दिया गया। आकाश में एक वाक्य आज भी गूंज रहा है- शहीदों की चिताओं पर, लगाओगे किस दिन तुम मेले, तुम्हारे मेलों की खातिर, वो चढ़े फांसी पर अकेले।

शहीद बिस्मिल की वसीयत : उन्होंने मौत के साये में अपनी आत्मकथा लिखी तथा फांसी के फंदे पर झूल गए ताकि उनके देशवासी सुख के हिंडोले में झूल सकें। अंग्रेजी साम्राज्य से टक्कर लेते हुए आहुत कर दी ताकि हम स्वराज्य का सुख भोग सकें। अनगिनत दिन भूखे-प्यासे रहकर काटे ताकि उनके देशवासी कभी भूखे न सोये। हमारा परम कर्तव्य नहीं कि भावी पीढ़ी उनकी आत्मकथा पढ़े- पुस्तकालयों में रखें- साथियों में उनके विचारों का प्रचार करें? शहीद बिस्मिल की आत्मकथा हमारे लिए अनमोल वसीयत है। **शत-शत नमन!!**

स्मृति दिवस
15 जून, शत-शत नमन

पंडित चमूपति, एम.ए.

पंडित चमूपति का जन्म 15 फरवरी, 1863 ई. में बहावलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम मेहता बसंदा राम था। बालक का नाम उन्होंने चम्पतराय रखा था। पं. चमूपति जी ने मिडिल परीक्षा में अपनी रियासत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैट्रिक की परीक्षा पास करके वे बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। कॉलेज में उन्होंने उर्दू काव्य लिखना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ 'जपजी' का उर्दू में काव्यानुवाद किया। एमए की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर आप उसी रियासत के एक मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में एमए करने के उपरांत भी स्थिरता नहीं आ पाई थी। प्रारंभ में वे सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुए तो फिर शनैः शनैः नास्तिक बन गये। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानंद के ग्रंथों के अध्ययन का सुयोग सुलभ हुआ। परिणाम स्वरूप ईश्वर के प्रति उनकी आस्था तो जम गई किंतु वे शंकर वेदांत की ओर झुकने लगे। यद्यपि वेदांत पर भी उनकी आस्था अधिक दिन तक टिकी नहीं रह पाई किंतु मूर्ति पूजा की ओर उनका झुकाव बढ़ गया। शनैः शनैः जब उनका अध्ययन परिपक्व होता गया तो वे आर्य समाज के सिद्धांतों को स्वीकार करने लगे। उन्हें वैदिक धर्म के प्रति आस्था हो गई। आर्य समाज में प्रविष्ट होने पर वे चम्पत राय से चमूपति बन गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्य संचालन हेतु पं. चमूपति जी लाहौर आ गये। सभा द्वारा संचालित दयानंद सेवा सदन के सदस्य बनकर उन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में अर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी को भी पंडित चमूपति की सेवाओं का लाभ प्राप्त हुआ था। इस गुरुकुल के वे उपाध्यक्ष, मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पदों को सुशोभित करते रहे। 15 जून 1939 को उनका स्वर्गवास हो गया। पं. चमूपति जी ने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। पं. चमूपति असाधारण कोटि के विद्वान थे। हिंदी, उर्दू, और अंग्रेजी इन तीनों विषयों पर उनका समान अधिकार था।

महाराणा प्रताप

जयंती : 16 जून
शत-शत नमन

महाराणा प्रताप जन्म राजस्थान के कुम्भलगढ़ में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जयवंत कंवर के घर हुआ था। महाराणा प्रताप की माता का नाम जयवंता बाई था, जो पाली के सोनगरा अखैराज की बेटी थी। महाराणा प्रताप को बचपन में कीका के नाम से पुकारा जाता था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुन्दा में हुआ। उनका नाम इतिहास में वीरता और दृढ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने कई सालों तक मुगल सम्राट अकबर के साथ संघर्ष किया। उन्होंने मुगलों को कईं बार युद्ध में भी हराया। 1576 के हल्दी घाटी युद्ध में 20,000 राजपूतों को साथ लेकर राणा प्रताप ने मुगल सरदार राजा मानसिंह के 80,000 की सेना का सामना किया। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को झाला मानसिंह ने आपने प्राण देकर बचाया और महाराणा को युद्ध भूमि छोड़ने के लिए बोला। शक्ति सिंह ने आपना अश्व देकर महाराणा को बचाया। प्रिय अश्व चेतक की भी मृत्यु हुई। यह युद्ध तो केवल एक दिन चला परन्तु इसमें 17,000 लोग मारे गए। मेवाड़ को जीतने के लिये अकबर ने सभी प्रयास किये। महाराणा की हालत दिन-प्रतिदिन चिंताजनक होती चली गई। 25,000 राजपूतों को 12 साल तक चले उतना अनुदान देकर भामा शाह भी अमर हुआ। उन्होंने अपने जीवन में कुल 11 शादियां की थी। महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया था। अकबर ने महाराणा प्रताप को समझाने के लिये चार शान्ति दूतों को भेजा। हल्दीघाटी का युद्ध : यह युद्ध 18 जून 1576 ईस्वी में मेवाड़ तथा मुगलों के मध्य हुआ था। इस युद्ध में मेवाड़ की सेना का नेतृत्व महाराणा प्रताप ने किया था। इस युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लड़ने वाले एकमात्र मुस्लिम सरदार थे- हकीम खां सूरी। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह तथा आसफ खां ने किया। इस युद्ध का आंखों देखा वर्णन अब्दुल कादिर बदायूनीं ने किया। इस युद्ध को आसफ खां ने अप्रत्यक्ष रूप से जेहाद की संज्ञा दी। इस युद्ध में बींदा के झालामान ने अपने प्राणों का बलिदान करके महाराणा प्रताप के जीवन की रक्षा की। वहीं ग्वालियर नरेश राजा रामशाह तोमर भी अपने तीन पुत्रों कुंवर शालीवाहन, कुंवर भवानी सिंह, कुंवर प्रताप सिंह और पौत्र बलभद्र सिंह एवं सैकडों वीर तोमर राजपूत योद्धाओं समेत चिरनिद्रा में सो गए। इतिहासकार मानते हैं कि इस युद्ध में कोई विजय नहीं हुआ। पर देखा जाए तो इस युद्ध में महाराणा प्रताप सिंह विजय हुए। अकबर की विशाल सेना के सामने मुट्ठीभर राजपूत कितनी देर तक टिक पाते, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ, ये युद्ध पूरे एक दिन चला और राजपूतों ने मुग़लों के छक्के छुड़ा दिया। भारत मां को नाज है अपने सपूतों पर जो देश रक्षा हित में बलिदान हो गए। OO

मानव निर्माण और आर्यसमाज

डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्यसमाज मानव निर्माण का सर्वांगीण चिंतन देता है। इसका मूलाधार वेद है। वेद प्राणीमात्र के कल्याण की बात कहते हैं। इसलिए वेद-ज्ञान सार्वभौमिक, सार्वजनिक, सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक है। वेदों के चिंतन का एक महत्त्वपूर्ण बिंदु आस्तिकता है। वेद मानव को आस्तिक बनने का उपदेश और संदेश देते हैं। आस्तिकता मानव को पूर्णता की ओर ले चलती है। आस्तिकता से मनुष्य को सुख, संतोष, शांति, प्रसन्नता, प्रेम और आनंद की प्राप्ति होती है।

आज मानव समाज में जहां कई प्रकार के प्रदूषण फैल रहे हैं वहां नास्तिकता का प्रदूषण बड़ी तेजी से फैल रहा है। चारों ओर कोलाहल, कोहराम, मार-काट, लूटपाट, पाप, अत्याचार आदि के परमाणु वातावरण को विषाक्त बना रहे हैं। मनुष्य मशीन बनकर उद्देश्यविहीन होकर दौड़ा जा रहा है? सर्वत्र अशांति रोग-शोक, अतृप्ति संघर्ष और चोरी-जारी फैल रही है। मानव समाजमें कोई भी, कहीं सुरक्षित, संतुष्ट तथा निरोगी नजर नहीं आ रहा है। जीवन का मूल छूटता जा रहा है। आज का मानव भौतिक सुख-भोग विलास की दृष्टि से समृद्ध होते हुए भी आंतरिक दृष्टि से अतृप्त, खोखला एवं अशांत हो रहा है।

सब कुछ होते हुए भी जीवन में अनेक प्रश्नचिह्न लगे हैं। जीवन का सहज सरल, रस-सौन्दर्य, धीरे-धीरे मानव से पृथक होता जा रहा है? एक अंधी दौड़ में सारा संसार भागा जा रहा है? किसी को नहीं मालूम है कि मेरा प्राप्तव्य क्या है? कहां से आया हूं? कहां जाना है? किसलिए आया हूं? आज मनुष्य के जीवन का लक्ष्य नितांत भोगवादी होता जा रहा है। इसलिए द्वंद्व और भागदौड़ बढ़ रही है? सभी अधिक से अधिक भोगना और संग्रह करना चाहते हैं। विज्ञान मानव के मन में अतृप्ति की आग जला रहा है। जितना हम संग्रह करते जा रहे हैं, उतने ही असंतुष्ट और दुखी होते जा रहे हैं। जब तक मानव आस्तिक नहीं बनता है तब तक वह ऐसे ही भटकता रहेगा। आस्तिकता मनुष्य को शांत, संतुष्ट व प्रसन्नता देता है।

आर्यसमाज का चिंतन हमें नास्तिकता से आस्तिकता की ओर प्रेरित करता है। आस्तिकता का आधार अणु-अणु और कण-कण में सर्वत्र विद्यमान परम सत्ता और वेद पर विश्वास है। जिस परम सत्ता को वेद-उपनिषद्-दर्शन, ऋषि-मुनि सभी नेति-नेति कहकर अगम्य एवं अगोचर बताते हैं। जिसकी अनुभूति के पश्चात् मानवदृष्टि व्यापक, मंगलमयी, भेदभाव-रहित और सर्वहितकारी बन जाती है, जहां पहुंचकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु, देवंहन्ति केतवः दृश्ये विश्वाय सूर्यम्' का भाव जागृत हो उठता है। आस्तिक उस परम प्रभु को इस संसार का स्वामी मानता है। स्वयं अपने को भोक्ता मात्र समझता है। फिर वह किसी के अधिकार को नहीं छीनता है। आस्तिक भाव जागने पर मानव ईश्वर-भक्त बन जाता है। वह संतुष्टि और तृप्ति अनुभव करने लगता है। फिर उसके जीवन का ध्येय बदल जाता है। भोगवादी दृष्टि बदल कर ईश्वर-प्राप्ति का लक्ष्य बन जाता है।

इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण है जिनसे जीवन ही बदल गये थे। जो कभी ईश्वर पर विश्वास ही नहीं करते थे, वे बाद में महान् ईश्वर भक्त कहलाये। आर्य समाज के क्षेत्र में दो नाम स्मरणीय हैं। जो नास्तिक से आस्तिक बने- स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुदत्त विद्यार्थी। जिन्होंने बाद में आस्तिकता का इतना प्रचार-प्रसार किया कि वे इतिहास में अमर हो गये।

आर्यसमाज आस्तिक बनने का

आर्यसमाज का चिंतन हमें नास्तिकता से आस्तिकता की ओर प्रेरित करता है। आस्तिकता का आधार अणु-अणु और कण-कण में सर्वत्र विद्यमान परम सत्ता और वेद पर विश्वास है। जिस परम सत्ता को वेद-उपनिषद्-दर्शन, ऋषि-मुनि सभी नेति-नेति कहकर अगम्य एवं अगोचर बताते हैं। जिसकी अनुभूति के पश्चात् मानवदृष्टि व्यापक, मंगलमयी, भेदभाव-रहित और सर्वहितकारी बन जाती है, जहां पहुंचकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु, देवंहन्ति केतवः दृश्ये विश्वाय सूर्यम्' का भाव जागृत हो उठता है। आस्तिक उस परम प्रभु को इस संसार का स्वामी मानता है। स्वयं अपने को भोक्ता मात्र समझता है। फिर वह किसी के अधिकार को नहीं छीनता है। आस्तिक भाव जागने पर मानव ईश्वर-भक्त बन जाता है। वह संतुष्टि और तृप्ति अनुभव करने लगता है। फिर उसके जीवन का ध्येय बदल जाता है। भोगवादी दृष्टि बदल कर ईश्वर-प्राप्ति का लक्ष्य बन जाता है।

सीधा, सच्चा और सरल मार्ग बताता है। आर्यसमाज की मान्यताएं वैज्ञानिक, व्यावहारिक, तर्कसंगत और जीवनोपयोगी हैं। उनमें किसी प्रकार के गुरुडम, पाखंड, अंधविश्वास, काल्पनिक तथा चमत्कारिक बातों के लिए स्थान नहीं है। इसका चिंतन मानवता का है। वेद मानव को उपदेश देता है। इस अखिल ब्रह्माण्ड का स्वामी परमात्मा है। उसकी ही स्तुति और उपासना करनी चाहिए। वह परमेश्वर न्यायाधीश के समान है। वह हमसे किसी पदार्थ की अपेक्षा नहीं करता है। वह तो सदा सभी जीवों का संरक्षक है। वह हमसे कभी दूर नहीं होता है। हम उसे छोड़ देते हैं। वह हमें कभी नहीं छोड़ता है। हम उसे भूल सकते हैं। वह हमें कभी नहीं भूलता है। उसकी कृपा और दया सब पर समान रूप से निरंतर बरसती है। वह सबको भरे पेट सुलाता है, भूखे पेट उठाता है। उसके अनंत भंडार हैं। उसके नियम और व्यवस्था अटल है। पत्ता-पत्ता, डाली-डाली तथा कण-कण उसका पता बता रहे हैं।

यह सारा संसार उस प्रभुदेव का सुंदर मंदिर है। इस मंदिर में वह रोज सबेरे होली मनाता है। कितने फूलों को खिलाता है। फूलों की सुगंध को बिखेरता है। प्रातःकालीन सुनहरी किरणों का कुंकुम अगजग पर लुटाता है। हर रात उसकी दीवाली होती है। असंख्य तारों के दीये जलाकर अपने अस्तित्व का संसार को बोध कराता है। किंतु हम कितने अज्ञानी मदहोश और बदकिस्मत हैं कि उसे कर्मों से नहीं देख पा रहे हैं। जो देख लेता है वह तो यही कहने लगता है-

समाया है जब से तू मेरी नजरों में।
जिधर देखता हू, उधर तू ही तू है॥

आर्यसमाज ऐसी ही आस्तिकता की प्रेरणा देता है। आज संसार को आस्तिकता की आवश्यकता है। तभी मानव दुखों, चिंताओं, रोगों, अभावों, संघर्षों आदि से छूट सकता है और छूटने का कोई भी मार्ग नहीं है। दुनिया में बड़ी तेजी से बुद्धिवादी नास्तिकता फैल रही है। आज का व्यक्ति साइंस और भौतिकता की चकाचौंध में उस शाश्वत् सत्य सनातन सत्ता पर प्रश्न-चिन्ह लगाने लगा है इससे पाप अधर्म, अन्याय, छल प्रपंच, भोग, वासना और खाओ-पीओ, मौज करो, के दानवी भाव बढ़ रहे हैं। आस्तिक व्यक्ति इन सब बुरे भावों से पृथक रहता है। वह तो अपने पुरुषार्थ, परिश्रम, ईमानदारी सच्चाई और न्याय से जो प्राप्त होता है। उसी में संतुष्ट रहता है। वह तो जीओ और जीने दो, में विश्वास रखता है।

आर्य समाज के पास संसार को देने के लिए बहुत ही श्रेष्ठ, प्रेरक उच्च दिव्य भाव और चिंतन है। किंतु पीड़ा से लिखना पड़ रहा है कि आज आर्य समाज अपने इस मूल उद्देश्य से हटता जा रहा है? वह भी अन्यों की तरह ईंट पत्थर, भवन और धन एकत्र करने में लग रहा है। जबकि उसके ऊपर मानव-निर्माण का बहुत बड़ा दायित्व है। मनुष्य विचारों से बनता है।

प्रभावपूर्ण विचार कोई नहीं दे पा रहा है। यही कारण है कि हमारे देश में इतने मठ, मंदिर, महंत, संत, ग्रंथ-सम्मेलन, भाषण, कथाएं आदि हो रहे हैं। ईमानदारी से सच्चे आस्तिक, धार्मिक, सात्विक व्यक्ति खोजने पर भी नहीं मिल पा रहे हैं? क्योंकि हमने परमात्मा, धर्म और भक्ति में भी व्यापार आरम्भ कर दिया है। सर्वत्र व्यापार हो रहा है। आस्तिकता घट रही है। नास्तिकता बढ़ रही है। यदि आर्य समाज अपने स्वरूप-कर्तव्य एवं धर्म को जाने-माने और समझे तो संसार का पथ-प्रदर्शक बन सकता है। भूले-भटके, दुखी, भोगी, विलासी, दुर्व्यसनी संसार को आशा और नवजीवन संजीवनी दे सकता है। यही ऋषिवर की कामना थी, वे पुनः भारत को गोरवमय स्वर्णिम पद पर आसीन देखना चाहते थे। तभी उन्होंने बड़ा सारगर्भित नारा दिया था-

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

यहां आर्य शब्द गुण वाचक है। गुण-कार्य स्वभाव से जिसमें आर्यत्व है। वही इस पदवी का अधिकारी है। यह पदवी बहुत ऊंची है। इसकी अलग पहचान है। हमारा कर्तव्य है कि इस शब्द की आन, मान व शान को कभी गिरने न दें। (तभी उस देवात्मा दयानन्द की आत्मा संतुष्ट हो सकेगी।)

आर्यसमाज को आस्तिकता के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी बिखरी हुई शक्ति को लगाना होगा। उसे पहले अपने समाज मंदिरों के स्वरूप और उद्देश्य को साफ-सुथरा करना चाहिए। हमारे स्तुति-प्रार्थना-उपासना स्थलों से सात्विकता, धार्मिकता और पवित्रता की भाव तरंगें नहीं उठ पा रही हैं? यह चिंतनीय पीड़ा है। इस ओर हम सबका ध्यान गंभीरता से जाना चाहिए। यही तो आस्तिकता फैलाने के केंद्र हैं। पूजा स्थल तब ठीक होंगे जब हम सच्चे अर्थों में आस्तिक बन जाएंगे। तब कुछ बात बन सकेगी।

अन्यथा भटकते हुए संसार की भीड़ में मिलकर हम अपनी पहचान खो बैठेंगे? लक्ष्य से भटक जाएंगे। आइए! इस जागरण की बेला में हम अपने आपको पहचानें और आस्तिकता का मार्ग प्रशस्त करके भटकते हुए संसार को एक नई दिशा दें। ❍❍

स्वामी जी का मूर्तिपूजा पर कड़ा प्रहार

खुशहाल चन्द्र आर्य, कोलकाता

मैं ने यह लेख महर्षि कृत उनके अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास को पढ़कर लिखा है। इसमें स्वामी जी ने प्रश्नोत्तर द्वारा मूर्ति पूजा पर एक तर्क के आधार पर कड़ा प्रहार किया है, जिसको पढ़कर पाठकगण अवश्य ही समझ लेंगे कि ईश्वर की उपासना केवल निराकार मानकर ही की जा सकती है और इसी उपासना से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

ईश्वर को साकार मानकर मूर्तिपूजा द्वारा ईश्वर की उपासना वेद विरुद्ध तो है ही साथ ही सही उपासना हो ही नहीं सकती। मैं समझता हूं कि इस लेख को पढ़कर पाठकगण अवश्य ही लाभ उठावेंगे और मूर्तिपूजा छुड़ाने में इससे काफी सहयोग मिलेगा। यदि थोड़ा भी सहयोग मिला, तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

प्रश्न–मूर्ति पूजा में पुण्य नहीं तो पाप भी नहीं।

उत्तर–कर्म दो किस्म के होते हैं।

विहित : जो कर्तव्यता से वेद में सत्यभाषणादि प्रतिपादित है। दूसरा निषिद्ध–जो अकर्मण्यता से मिथ्या भाषण आदि वेद में निषिद्ध है। जैसे विहित का अनुष्ठान करना वह धर्म है। जब वेद से विरुद्ध मूर्तिपूजादि कर्म आप करते हो, तो पापी क्यों नहीं।

प्रश्न– साकार में मन स्थिर होता है और निराकार में स्थिर होना कठिन है इसलिए मूर्तिपूजा करनी चाहिए।

उत्तर– साकार में मन स्थिर कभी भी नहीं हो सकता क्योंकि उसको मन ग्रहण करके उसी के एक–एक अवयव में घूमने और दूसरे में दौड़ जाता है। और निराकार अनंत परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यंत दौड़ता है, तो भी अंत नहीं पाता। निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता, किंतु इसी के गुण–कर्म–स्वभाव का विचार करता–करता आनंद में मग्न होकर स्थिर हो जाता है। और जो साकार में स्थित होता तो सब जगत का मन स्थिर हो जाता है क्योंकि जगत में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, भिन्न आदि साकार में फंसा रहता है, परंतु किसी का मन स्थिर नहीं होता, इसलिए मूर्ति पूजा करना अधर्म है।

प्रश्न– जो अपने आर्यावर्त में 'पञ्चदेव पूजा' जो कि प्राचीनकाल से चला जाता है, उसका 'पञ्चयतन पूजा' जो शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजते हैं, तो क्या यही 'पञ्चयतन पूजा' है या नहीं ?

उत्तर– किसी प्रकार की मूर्ति पूजा न करना किंतु 'मूर्तिमान' की पूजा अर्थात् सत्कार करना चाहिए। वह पञ्चदेव पूजा या पञ्चयतन पूजा शब्द बहुत अच्छे अर्थ वाला था, परंतु मूढ़ों ने इस सदर्थ को छोड़कर, असत्य अर्थ पकड़ लिया जो आजकल शिवादि पांचों की मूर्तियां बनाकर पूजते हैं उनका खंडन तो कर चुके हैं। सच्ची पञ्चयतन पूजा कुछ मंत्रों के आधार पर इस प्रकार है–

प्रथम मूर्तिमती पूज्यनीय देवता के रूप में 'माता', जिसको तन, मन, धन से तथा सेवा से संतान को चाहिए कि उसे प्रसन्न रखे। उसका मन किसी प्रकार से भी दुखी न करे। दूसरा सत्कर्तव्य देव के रूप में 'पिता' उसकी भी माता के समान सेवा करे। तीसरा देव जो विद्या को देने वाला है, वह है 'आचार्य'। उसकी भी तन, मन, धन से सेवा करनी चाहिए।

चौथा देव है 'अतिथि' जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी, सब की उन्नति चाहने वाला, जगत में भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेश से सुखी करता है, उसकी सेवा करनी चाहिए। पांचवां स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए पत्नी पूज्यनीय है। ये पांच मूर्तिमान देव हैं, जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियां हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं वे अतीव पामर, नरकगामी हैं।

प्रश्न– माता पिता की सेवा करें और मूर्तिपूजा भी करें, तब तो कोई दोष नहीं।

उत्तर– पाषाणादि मूर्तिपूजा को सर्वथा छोड़ने और मातादि मूर्तिमानों की सेवा करने में ही कल्याण है। बड़े अनर्थ की बात है कि साक्षात् माता आदि, प्रत्यक्ष सुखदायक देवों को छोड़ के अदेव पाषाणादि में शिर मारना, स्वीकार करते हैं। इसको मूढ़ों ने इसलिए स्वीकार किया है कि जो माता–पितादि के सामने नैवेद्य या भेंट–पूजा धरेंगे तो स्वयं खा लेंगे और भेंट–पूजा भी ले लेंगे। हमारे मुख या हाथ में कुछ न पड़ेगा। इसीलिए ये पाषाणादि की मूर्ति बना, उनके आगे नैवेद्य व भेंट–पूजा चढ़ाते हैं, ताकि उनको मिलता रहे।

वेद ही अपौरुषेय एवं सच्चा विश्व धर्म ग्रन्थ

वेद जैसा ईश्वर व सृष्टि के रहस्यों का वर्णन संसार के किसी मत-पन्थ के ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। अतः वेद अपौरुषेय ग्रन्थ सिद्ध हैं। न केवल ईश्वर का सत्य स्वरूप ही वेदों में वर्णित है अपितु जीवात्मा और सृष्टि का सत्यस्वरूप भी वेद व उनके व्याख्याग्रन्थों में वर्णित है। वेदों की सच्ची व मोक्ष लाभ कराने वाली ईश्वर की उपासना का ज्ञान व विज्ञान भी वेदों से ही प्राप्त होता है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ही संसार के सबसे प्राचीन धर्म ग्रन्थ हैं। वेद ही संसार के प्रमुख व सत्य धर्म ग्रन्थ हैं, इसकी एक कसौटी यह है कि वेद में ईश्वर को अनेक गुणों एवं विशेषणों सहित सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, अनादि, नित्य, निराकार और सर्वव्यापक बताया गया है। संसार में जितने मत, पन्थ, सम्प्रदाय आदि प्रचलित हैं वह सब प्रायः ईश्वर को एकदेशी, स्थान विशेष पर रहने वाला ही स्वीकार करते हैं जबकि वैदिक धर्म उनसे करोड़ों व अरबों वर्ष पूर्व उत्पन्न होने पर भी ईश्वर को निराकार एवं सर्वव्यापक मानता है। वेद में न तो अवतारवाद है और न ही किसी के ईश्वर पुत्र व सन्देश वाहक होने का सिद्धान्त।

आज का युग ज्ञान विज्ञान का युग है। यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड ईश्वर की रचना है। इस संसार की रचना किसी एकदेशी सत्ता से कदापि नहीं हो सकती। इसे तो कोई निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अजन्मा, सर्व-व्यापक व सर्वान्तर्यामी सत्ता ही बना सकती है। आज ब्रह्माण्ड का जितना विस्तृत ज्ञान है उतना आज से हजार या दो-तीन हजार वर्ष पूर्व नहीं था। तब किसी को यह पता भी नहीं था कि इस ब्रह्माण्ड में अनन्त सूर्य, अनन्त पृथिव्यां व सौर मंडल हैं जिनका परिमाण हर प्रकार से अनन्त है।

वेदों में इसका ऐसा ही वर्णन है जबकि अन्य किसी धर्म व पंथ के धर्मग्रन्थ में वेदों के समान सत्य व यथार्थ वर्णन नहीं है। इसी कारण वेद पूर्ण सत्य ग्रन्थ हैं और ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होते हैं क्योंकि किसी मनुष्य या मनुष्य समुदाय की यह क्षमता नहीं कि वह संसार की समस्त सत्य विद्याओं का एक ग्रन्थ बना सके।

वेद और ईश्वर विषयक सत्य व यथार्थ ज्ञान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सत्यार्थ प्रकाश व अन्य अनेक ग्रन्थ मार्गदर्शक हैं जिनका अध्ययन कर एक साधारण व्यक्ति भी सृष्टि के यथार्थ रहस्यों को जान सकता है। अन्य किसी ग्रन्थ वह ज्ञान प्राप्त नहीं होता जो कि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ व अन्य ऋषि ग्रन्थों से होता है।

वेदों में न केवल एक ईश्वर जो कि निराकार व सर्वव्यापक है, शरीर व नस नाड़ी के बंधन से रहित है, ऐसे स्वरूप वाले ईश्वर का निश्चयात्मक वर्णन है। वेद जैसा ईश्वर व सृष्टि के रहस्यों का वर्णन संसार के किसी मत-पन्थ के ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। अतः वेद अपौरुषेय ग्रन्थ सिद्ध हैं। न केवल ईश्वर का सत्य स्वरूप ही वेदों में वर्णित है अपितु जीवात्मा और सृष्टि का सत्यस्वरूप भी वेद व उनके व्याख्याग्रन्थों में वर्णित है। वेदों की सच्ची व मोक्ष लाभ कराने वाली ईश्वर की उपासना का ज्ञान व विज्ञान भी वेदों से ही प्राप्त होता है। अतः वेद संसार के सभी मनुष्यों के एकमात्र धर्म ग्रन्थ सिद्ध हैं। महाभारत काल तक वेद ही पूरी सृष्टि के सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ रहे हैं और अनुमान से कह सकते हैं कि ज्ञान विज्ञान की वृद्धि के इस युग में आने वाले समय में वेद ही समस्त संसार के एकमात्र धर्मग्रन्थ होंगे। वेदों के वह सभी व्याख्याग्रन्थ जो पूर्णतः वेदानुकूल हैं, वही भविष्य में सर्वत्र स्वीकार्य होंगे। इसका यह प्रमाण है कि सूर्य को ग्रहण अवश्य लगता है परन्तु वह स्थाई नहीं होता। कुछ ही समय में सूर्य ग्रहण समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार वेद सूर्य पर महाभारत काल व उसके बाद से कुछ समय के लिये जो ग्रहण लगा है वह आने वाले समय में छंट जायेगा और पश्चात् वेद सूर्य की भांति अपनी पूरी आभा व तेज के साथ पूरे विश्व में अपनी ज्ञान की किरणों से सुलभ होगा। संसार में एक सर्वव्यापक ईश्वर के होते हुए यह संसार अधिक समय तक अज्ञानी व अविद्याग्रस्त नहीं रह सकता। रात्रि की समाप्ती होती है और उसके बाद प्रातः अवश्य आती है। वर्तमान अर्धरात्रि का काल भी शीघ्र ही अवश्य समाप्त होगा, ऐसी आशा सभी आस्तिक बन्धुओं को रखनी चाहिये।

ओ३म्!!

साभार : आर्यसमाज ब्लॉग

Yog in Life

Yog Diwas 21 June Special : Giriraj Sudha

Indian paths of yog have strong relevance to managing work, life affairs and human behaviours. We can apply the principles and philosophy of yoga in managing the complex situations and difficult problems. We can use the essence of yog in our journey towards the Divine Goal and spiritual attainment. But it seems that we have forgotten the invaluable messages of yog path that it has for common human beings. These spiritual and philosophical ideas of Indian yog have been put to extensive practical demonstrations by many sages, saints and thinkers. Such relevance and uses of yog thoughts for managing life affairs are discussed below:

1. Skill in Action and Evenness of Mind : This is very important yog thought for a common man. In the second chapter of GITA. Lond Krishna's defined YOG (Stanza 50 & 48). He says "YOG is dexterity/skill in action" and "Evenness of mind". This indicates the art of working with perfect equilibrium in all the different conditions. There are pairs of opposites, like pain and pleasure, gain and loss, victory and defeat etc. But a person should not only have perfect skill required in any action but one should also have an understanding : To perform the action without attaching it to future, past or to its results; To perform acts in equanimity; To just engross in his or her work only; To accept the result with calmness of mind, showing emotional maturity.

2. Controlling Everyday Relationships : The Yoga Sutras can provide guidance about human consciousness with directions on how to navigate our way through life's ups and downs. Emphasis is laid on turning our attention inward to more fully understand what our true nature is all about. Who are we now? How can we become more happy and fulfilled human beings?

3. Leads to Inquiry : The Yog Sutras are a gateway into the realm of inquiry. Yog offers ideas to see into patterns of emotional and psychological holding and behaviour. Yog leads man to make inquiry into situations before making decisions. People should understand that "at the heart of yog practice is inquiry. In order for human beings to transform in positive ways involving mind, body and emotion, there must be some critical means of self-reflection."

4. Leads to Self-Knowledge : This idea of knowing Self Is very important for people. They must realize that "Inquiry or investigative self-reflection is the basis for yogic maturation and ultimately the means to self knowledge."

5. Builds Capacity to Discriminate and Good Judgment : Yog thoughts improve the man's capacity to discriminate and to make judgment-clearly, objectively and lovingly-for others' activities and behaviours. To make progress on the path, the yogi nastave the sword of discrimination held up high, with readiness to cut through. The Yoga Sutras inspire practitioners to keep their blade of discriminatory awareness sharp.

OO

क्या न था और बहाना कोई तड़पाने को : राम प्रसाद बिस्मिल

4 जून जन्म दिवस पर विशेष

हैफ़ हम जिसपे कि तैयार थे मर जाने को
जीते जी हमने छुड़ाया उसी कशाने को
क्या न था और बहाना कोई तड़पाने को
आस्मां क्या यही बाक़ी था सितम ढाने को
लाके गुरबत में जो रक्खा हमें तरसाने को

फिर न गुलशन में हमें लाएगा सैयाद कभी
याद आएगा किसे यह दिल-ए-नाशाद कभी
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फ़रियाद कभी
हम भी इस बाग़ में थे क़ैद से आज़ाद कभी
अब तो काहे को मिलेगी ये हवा खाने को

दिल फ़िदा करते हैं कुरबान जिगर करते हैं
पास जो कुछ है वो माता की नज़र करते हैं
खाना वीरान कहां देखिए घर करते हैं
खुश रहो अहल-ए-वतन, हम तो सफ़र करते हैं
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को

न मयस्सर हुआ राहत से कभी मेल हमें
जान पर खेल के भाया न कोई खेल हमें
एक दिन का भी न मंजूर हुआ बेल हमें
याद आएगा अलीपुर का बहुत जेल हमें
लोग तो भूल गये होंगे उस अफ़साने को

अंडमान खाक तेरी क्यों न हो दिल में नाज़ा
छूके चरणों को जो पिंगले के हुई है जीशां
मरतबा इतना बढ़े तेरी भी तक़दीर कहां
आते आते जो रहे 'बॉल तिलक' भी मेहमां
'मांडले' को ही यह एज़ाज़ मिला पाने को

बात तो जब है कि इस बात की ज़िदे ठानें
देश के वास्ते कुरबान करें हम जानें
लाख समझाए कोई, उसकी न हरगिज़ मानें
बहते हुए खून में अपना न गरेबां सानें

नासेह, आग लगे इस तेरे समझाने को
अपनी क़िस्मत में अज़ल से ही सितम रक्खा था
रंज रक्खा था, मेहन रक्खा था, ग़म रक्खा था
किसको परवाह थी और किसमें ये दम रक्खा था
हमने जब वादी-ए-गुरबत में क़दम रक्खा था
दूर तक याद-ए-वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर
हम भी मां बाप के पाले थे, बड़े दुःख सह कर
वक्त-ए-रुख़्सत उन्हें इतना भी न आए कह कर
गोद में आंसू जो टपके कभी रूख़ से बह कर
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को

देश-सेवा का ही बहता है लहू नस-नस में
हम तो खा बैठे हैं चित्तौड के गढ की क़समें
सरफरोशी की अदा होती हैं यों ही रसमें
भाल-ए-खंजर से गले मिलते हैं सब आपस में
बहनों, तैयार चिताओं में हो जल जाने को

अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली
एक होती है फक़ीरों की हमेशा बोली
खून में फाग रचाएगी हमारी टोली
जब से बंगाल में खेले हैं कन्हैया होली
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को

अपना कुछ ग़म नहीं पर हमको ख़याल आता है
मादर-ए-हिंद पर कब तक जवाल आता है
'हरदयाल' आता है 'यरोप' से न 'लाल' आता है
देश के हाल पे रह रह के मलाल आता है
मुन्तजिर रहते हैं हम खाक में मिल जाने को
नौजवानों, जो तबीयत में तुम्हारी ख़टके
याद कर लेना हमें भी कभी भूले-भटके

आप के जुज़वे बदन होवे जुदा कट-कट के
और सद चाक हो माता का कलेजा फटके
पर न माथे पे शिकन आए क़सम खाने को

देखें कब तक ये असिरान-ए-मुसीबत छूटें
मादर-ए-हिंद के कब भाग खुलें या फूटें
गाँधी अफरीका की बाज़ारों में सडकें कूटें
और हम चैन से दिन रात बहारें लूटें
क्यों न तरजीह दें इस जीने पे मर जाने को

कोई माता की उम्मीदों पे न डाले पानी
ज़िंदगी भर को हमें भेज के काले पानी
मुंह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी
आब-ए-खंजर का पिला करके दुआ ले पानी
भरने क्यों जायें कहीं उम्र के पैमाने को

मैक़दा किसका है ये जाम-ए-सुबू किसका है
वार किसका है जवानों ये गुलू किसका है
जो बहे क़ौम के खातिर वो लहू किसका है
आस्मां सॉफ बता दे तू अदू किसका है
क्यों नये रंग बदलता है तू तड़पाने को

दर्दमन्दों से मुसीबत की हलावत पूछो
मरने वालों से ज़रा लुत्फ़-ए-शहादत पूछो
चश्म-ए-गुस्ताख से कुछ दीद की हसरत पूछो
कुश्त-ए-नाज़ से ठोकर की क़यामत पूछो
सोज़ कहते हैं किसे पूछ लो परवाने को

नौजवानों यही मौक़ा है उठो खुल खेलो
और सर पर जो बला आए खुशी से झेलो
क़ौम के नाम पे सदक़े पे जवानी दे दो
फिर मिलेंगी न ये माता की दुआएं ले लो
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ।

तांत्रिकों का खौफ : हमारा भ्रम

सुरेंद्र कुमार रैली

अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

आज इस आधुनिक युग में वर्तमान की भागदौड़ में मनुष्य इतनी उन्नति और विकास के बावजूद अपने डर और वहम पर काबू नहीं पा सका है। अपनी मानसिक कमजोरी को दूर करने की बजाय तांत्रिकों के भ्रमजाल में फंस रहा है। उसके इस भ्रमजाल में फंसने का सबसे बड़ा कारण हमारा इन तांत्रिकों पर, इन तांत्रिकों की शक्तियों पर अंधविश्वास है अर्थात् हम बिना कुछ सोचे समझे इस तांत्रिक विद्या पर गहरा विश्वास करते हैं और ये समझ बैठते हैं कि इन तांत्रिकों के पास काला जादू है, बड़ी-बड़ी दैवीय शक्तियां होती हैं और उनका भय हमारे भीतर होता है।

प्राचीन समय में जब तक विज्ञान का विकास नहीं हुआ था तब तक सभी प्राकृतिक आपदाओं, कर्म-अकर्म के फल, रोग, गरीबी, दुख इत्यादि को परमात्मा या शैतान के प्रकोप का रूप माना जाता था। सूक्ष्म तरंगों के विज्ञान एवं आंतरिक शक्तियों को जानने वाले पंडित ज्योतिषी, ब्राह्मण वर्ग, तांत्रिक एवं साधु-महात्मा जैसे लोगों ने मानव की इस अज्ञानता एवं भय का खूब लाभ उठाया। उनके इस भय को स्थाई बनाने के लिए चालाक, शिक्षित, विद्वान वर्ग ने ऐसी-ऐसी पौराणिक कहानियां तथा कथाएं बना दी, जिससे सीधा-सादा मानव ईश्वरीय प्रकोप, शैतान, तंत्र की शक्तियों का भय हमेशा अपने मन में बैठाए रखें। इसमें वे खूब सफल रहे।

विडम्बना तो ये हैं कि विज्ञान के भरपूर विकास के बावजूद भी मानव मस्तिष्क आज भी आदिवासियों की तरह ईश्वरीय प्रकोप, तांत्रिक शक्तियों, ग्रहों के प्रभाव जैसी चीजों से डरा हुआ है। मानव खान-पान या रहन-सहन से भले ही आधुनिक हो चुका हो परंतु मस्तिष्क तो वही पुराना आदिवासी है, उसमें कोई अंतर नहीं आया आज भी 90 प्रतिशत लोग तथाकथित पंडित, पादरी, मौलवी, ज्योतिषी, साधु-संतों एवं तांत्रिकों के चंगुल में फंसे हुए हैं। आज भी हर एक के दिमाग में यही दृढ़ विश्वास है कि सारी अद्‌भुत शक्तियां केवल इन्हीं लोगों के पास हैं। ये लोग कुछ भी कर सकते हैं। ये लोग ईश्वर के या शैतान के एजेंट हैं।

ये जैसा चाहे काम ईश्वर से या शैतान से करवा सकते हैं। ईश्वर और शैतान इनकी मुट्ठी में होते हैं। ये जैसे चाहे उन्हें नचा सकते हैं। बस जरूरत है तो मुंह मांगी रकम देने की। जबकि सत्य यह है कि 10 मिनट बाद उनके साथ क्या होने वाला है वे स्वयं नहीं जानते। ऐसे ज्योतिषी, बाबा या तांत्रिक आपके भय का, आपकी कमजोर मानसिकता का लाभ जरूर उठाते हैं। और शिक्षित कहे जाने वाले वैज्ञानिक, डॉक्टर, वकील, प्रोफेसर, एमबीए, मिनिस्टर, आईएएस उन पर आंख मूंद कर आदिवासियों की तरह निःसंदेह विश्वास कर लेते हैं। यह हमारा भ्रम है, इनसे बचना चाहिए।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 26 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

महर्षि दयानन्द और वैदिक समाजवाद

स्वामी अग्निवेश

आप जिस वैदिक समाजवाद की चर्चा कर रहे हैं और उत्पादन के साधनों का सामाजीकरण जरूरी बताकर शिक्षा आदि को निःशुल्क करने का उत्तरदायित्व राष्ट्र के ऊपर डाल रहे हैं- क्या इन सब का कोई संबंध महर्षि दयानन्द की विचारधारा के साथ है? हमारी समझ में तो महर्षि दयानन्द का समाजवाद, अर्थव्यवस्था, सामाजिकीकरण आदि बातों से कुछ लेना-देना नहीं था। ये बातें तो उन पर जबरदस्ती थोपी जा रही हैं। वे तो केवल यही चाहते थे कि लोग मूर्तिपूजा छोड़कर संध्या-हवन करने लग जायें, मरे हुए माता-पिता का श्राद्ध छोड़कर जीवित पितरों की सेवा करने लगें और बाल-विवाह आदि कुरीतियां समाप्त कर संयम और सदाचार का जीवन यापन करने लग जायें। वे एक समाज-सुधारक थे और पढ़ने से तो ऐसा लगता है कि वे कुछ-कुछ पूंजीवादी थे और सम्पत्ति पर व्यक्ति का अधिकार मानते थे।

उत्तर : आपका ऐसा सोचना सरासर मिथ्याभ्रम है। महर्षि दयानन्द को महज एक समाज-सुधारक समझना अपनी अल्पबुद्धि का परिचय देना है। महर्षि दयानन्द को समझने के लिए उनकी समग्रता को आत्मसात् करना होगा। महर्षि की विशेषता यह है कि वे एकाकी नहीं थे। उनके असामयिक निधन के कारण मानवता उनके असीम ज्ञान भंडार के बहुत बड़े हिस्से से वंचित रह गई पर जितना थोड़ा-बहुत साहित्य उन्होंने लिख छोड़ा है वह उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व का पूरा परिचय देता है। महर्षि दयानन्द केवल संध्या-हवन ही नहीं चाहते थे। यदि उनके सारे साहित्य और उनके जीवन के अंतिम वर्षों के कार्य का कोई गहराई से विश्लेषण करें तो ज्ञात होता है कि वे सबसे अधिक यह चाहते थे कि इस धरती पर आर्यों का (अर्थात् मेहनतकश, ईमानदार, श्रमिकों का) अखंड राज्य स्थापित हो और धरती पर बसने वाले सभी दस्युओं (अर्थात् शोषकजनों) का संहार हो। अपने प्रस्तावित आर्य राज्य का विधायक कार्यक्रम वे वैदिक वर्णाश्रम प्रणाली पर आधारित करना चाहते थे। अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के अनेक समुल्लास उन्होंने इस विषय पर लिखे हैं। इस वैदिक वर्णाश्रम प्रणाली के अंतर्गत जो बातें उन्होंने सूत्ररूप में बताई हैं, वे पूर्णरूप से समाजवादी और समतामूलक समाज के पक्ष में है।

प्रश्न : क्या आप इस संबंध में कोई उदाहरण दे सकते हैं?

उत्तर : अवश्य, देखिए सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास के अंत में महर्षि दयानन्द मनुस्मृति का उद्धरण देकर कहते हैं- राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रख के विद्वान कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का व लड़की किसी के घर न रहने पावे किंतु आचार्य कुल में रहे। जब तक समावर्तन का समय न आवे तक तक विवाह न होने पावे। इस तरह हम देखते हैं कि महर्षि अनिवार्य शिक्षा के तथा शिक्षा के क्षेत्र में राजकीय हस्तक्षेप के समर्थक थे। समाजवाद का मूल सिद्धांत है- सबको उन्नति के समान अवसर प्रदान करना।

इस दिशा में अनिवार्य शिक्षा एक महत्वपूर्ण कदम है पर इसके साथ यह भी जरूरी है कि विद्यार्थी के शिक्षणकाल का सम्पूर्ण व्यय राष्ट्र वहन करे और सभी विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के समान सुविधाएं निःशुल्क प्राप्त हो। इस संबंध में निर्देश करते हुए महर्षि तीसरे समुल्लास के आरम्भ में कहते हैं कि (पाठशाला में) सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन दिए जायें, चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की संतान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए।

वर्तमान की पूंजीवादी व्यवस्था में हम देखते हैं कि अमीरों के बच्चे तो पब्लिक स्कूलों में या कानवेन्ट्स में जाते हैं, बाद में वो विदेशों में भी जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं और जीवन में उन्नति करते जाते हैं। दूसरी तरफ गरीब मां-बाप के बच्चे बचपन से ही अपने मां-बाप के साथ मजदूरी करते हैं और यदि वे पढ़ने भी जाते हैं तो फीस, पुस्तक व्यय आदि के अभाव में उनकी पढ़ाई रुक जाती है, उनकी योग्यता कुंठित हो जाती है और अपनी अविकसित प्रतिभा के कारण वे जीवन की दौड़ में अभिजात वर्ग के युवकों से पिछड़ जाते हैं। इस विषमता को मिटाने का यही रास्ता है कि सब बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क हो ताकि उनकी योग्यताओं के विकास का उन्हें समुचित अवसर मिल सकें।

OO

समाचार - सूचनाएं

- प्रो. महावीर जी राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित : संस्कृत शिक्षा जगत के ख्याति प्राप्त उच्चकोटि के विद्वान, पतंजलि विश्व विद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. महावीर जी को 4 अप्रैल 2019 को उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू जी के द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्ति के लिए आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल नोएडा की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

- अग्निहोत्र धर्मार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में मूर्धन्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में भव्य समारोह का आयोजन देहरादून के तपोवन, वैदिक साधन आश्रम, नालापानी में 19 मई को किया गया। समारोह में वैदिक विद्वानों, आर्यनेताओं ने स्वामी जी को उनके द्वारा किये गये कार्यों के लिए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

- आर्यवीरदल दिल्ली प्रदेश का चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल इंद्रप्रस्थ, फरीदाबाद में आयोजित किया गया।

- अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में वैचारिक क्रांति शिविर का समापन कार्यक्रम मावलंकर हाल, दिल्ली में 26 मई को हुआ, जिसमें विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से अनेक कार्यकर्ताओं ने अपनी प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को सफल बनाया।

- 27 मई से 31 मई तक योग साधना एवं स्वास्थ्य शिविर- श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ, गुरुकुल पौंधा, देहरादून में आयोजित हुआ। जिसमें स्वामी चितेश्वरानन्द सरस्वती और डॉ. सोमदेव शास्त्री द्वारा मार्ग दर्शन प्रदान किया गया।

- सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रतिक्षण हेतु राष्ट्रीय शिविर का आयोजन 2 जून से 16 जून तक गुरुकुल शिवालिक अलियासपुर अम्बाला-हरियाणा में किया जा रहा है।

- सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर 31 मई से 9 जून तक महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अमजेर-राजस्थान में किया जा रहा है।

शोक समाचार

योगधाम ज्वालापुर, हरिद्वार के योग प्रचारक, संस्थापक, ऋषिभक्त स्वामी दिव्यानन्द जी का 81 वर्ष की आयु में देहावसान 28 मई को हो गया था। वह कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। अनेक पुस्तकों के लेखक यज्ञों के ब्रह्मा, योगी, कुशल वक्ता का चले जाना आर्यजगत के लिए अपूर्ण क्षति है। उनकी अंत्येष्टि 29 मई को कनखल श्मशान घाट पर की गई। आर्यजगत की कई विभूतियों, नेताओं द्वारा उन्हें श्रद्ध-सुमन अर्पित किये गये।

आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के समस्त अधिकारियों, सदस्यों, आचार्यों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

'विश्ववारा संस्कृति' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' दिनांक 20 तारीख तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रबंध संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।
2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा पत्रिका नहीं भेजी जायेगी।
3. लेख प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।
4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही लिया जायेगा।
5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ, कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य विषयों पर हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत के लेख पढ़ने को मिलेंगे।
6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति' भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय 'विश्ववारा संस्कृति' में निकाला जायेगा।
7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा।
8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221, 7011279734
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com
captakg21@yahoo.co.in

यूं बने मूलशंकर से स्वामी दयानंद सरस्वती

मूलशंकर ने संन्यासी बनने की राह पकड़ ली और अपना नाम बदलकर 'शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी' रख लिया। वे सन् 1847 में घूमते-घूमते नर्मदा तट पर स्थित स्वामी पूर्णानंद सरस्वती के आश्रम में जा पहुंचे और उनसे 24 वर्ष, 2 माह की आयु में 'संन्यास-व्रत' की दीक्षा ले ली। 'संन्यास-दीक्षा' लेने के उपरांत उन्हें एक नया नाम दिया गया, 'दयानंद सरस्वती'। अब दयानंद सरस्वती को आश्रम में रहते हुए बड़े-बड़े साधु-सन्तों से अलौकिक ज्ञान प्राप्त करने, वेदों, पुराणों, उपनिषदों और अन्य धार्मिक साहित्यों के गहन अध्ययन करने, अटूट योगाभ्यास करने और योग के महात्म्य को साक्षात जानने का भरपूर मौका मिला। उन्होंने अपनी योग-साधना के दृष्टिगत विंध्याचल, हरिद्वार, गुजरात, राजस्थान, मथुरा आदि देशभर के अनेक महत्वपूर्ण पवित्र स्थानों की यात्राएं कीं। इसी दौरान जब वे कार्तिक शुदी द्वितीया, संवत् 1917, तदनुसार, बुधवार, 4 नवम्बर, सन् 1860 को यम द्वितीया के दिन मथुरा पहुंचे तो उन्हें परम तपस्वी दंडी स्वामी विरजानंद के दर्शन हुए। वे एक परम सिद्ध संन्यासी थे। पूर्ण विद्या का अध्ययन करने के लिए उन्होंने स्वामी जी को अपना गुरू बना लिया। सन् 1860-63 की तीन वर्षीय कालावधि के दौरान दयानंद सरस्वती ने अपने गुरु की छत्रछाया में संस्कृत, वेद, पाणिनीकृत अष्टाध्यायी आदि का गहन अध्ययन पूर्ण किया।

○ (क्रमशः)

खूब पीएं पानी नहीं लगेगी लू

खाद्य स्वच्छता के लिए यह सूत्र याद रखें- गर्म करें, उबालें, पकाएं, छीलें फिर खाएं। कोई भी भोजन या तरल, यदि उपयोग करने से पहले गर्म किया जाता है, तो संक्रमण का कारण नहीं बन सकता। कोई भी तरल या पानी, यदि उपयोग करने से पहले उबाला जाता है, तो संक्रमण का कारण नहीं बन सकता है। कोई भी फल, जो हाथों से छीला जा सकता है, उदाहरण के लिए, केला और नारंगी, तो वो भी संक्रमण का कारण नहीं बन सकता है।

गर्मियों में अत्यधिक पसीना आने के कारण इस मौसम में वयस्कों के शरीर में पानी की जरूरत 500 मिलीलीटर बढ़ जाती है। इसका ध्यान रखते हुए खूब पानी पीना आपको हीट सट्रोक से बचाएगा। लंबे समय तक गर्मी में रहने के कारण होने वाली तीन सबसे आम समस्याएं हैं, जिनमें ऐंठन, थकावट और हीट स्ट्रोक शामिल हैं। अत्यधिक पसीना निकलने से मूत्र और लार के रूप में तरल पदार्थ तथा इलेक्ट्रोलाइट्स का प्राकृतिक नुकसान होता रहता है, जिससे डिहाइड्रेशन और इलेक्ट्रोलाइट्स का तीव्र असंतुलन हो सकता है। हार्ट केयर फाउंडेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. के.के. अग्रवाल का कहना है, गर्मियों में अत्यधिक पसीना आने के कारण वयस्कों में पानी की आवश्यकता 500 मिलीलीटर तक बढ़ जाती है। यह टाइफाइड, पीलिया और दस्त का मौसम भी है। इसके कुछ कारणों में पर्याप्त मात्रा में पानी न पीना और खराब भोजन, पेयजल व हाथों की स्वच्छता न रखना शामिल है। आपका पर्यावरण तय करता है कि आपको कितना पानी पीना चाहिए। गर्म जलवायु वाले व्यक्तियों को पसीने के माध्यम से खोए हुए तरल की भरपाई करने के लिए अधिक पानी पीना चाहिए।

फल, सब्जियों में गर्मी से लड़ने का हथियार

लौकी, तोरी, टिंडा, कद्दू आदि गर्मियों की सब्जियां हैं, जो बेलों पर उगती हैं। इन सभी में पानी की मात्रा अधिक होती है और ये मूत्रवर्धक होती हैं। ये प्रकृति के कुछ नियमों का पालन करती हैं। प्रकृति हमेशा उस मौसम के रोगों को रोकने के लिए जानी जाने वाली सब्जियों और फलों का उत्पादन करती है। उदाहरण के लिए, नारियल तटीय क्षेत्रों में उगते हैं, क्योंकि वे आर्द्रता संबंधी विकारों से प्रतिरक्षा प्रदान करते हैं। गर्मियों में आम पकते हैं, क्योंकि आम का पना गर्मी के विकारों को रोक सकता है।

हो सकता है निर्जलीकरण

अधिक समय तक धूप में रहने, शारीरिक गतिविधि, उपवास, तीव्र आहार, कुछ दवाओं और बीमारी व संक्रमण के चलते निर्जलीकरण कही भी और कभी भी हो सकता है। इसके आम लक्षणों में थकान, चक्कर आना, सिरदर्द, गहरे पीले रंग का मूत्र, शुष्क मुंह और चिड़चिड़ापन शामिल हैं। इसलिए इस मौसम में खुद को हाइड्रेटेड रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहना महत्वपूर्ण है।

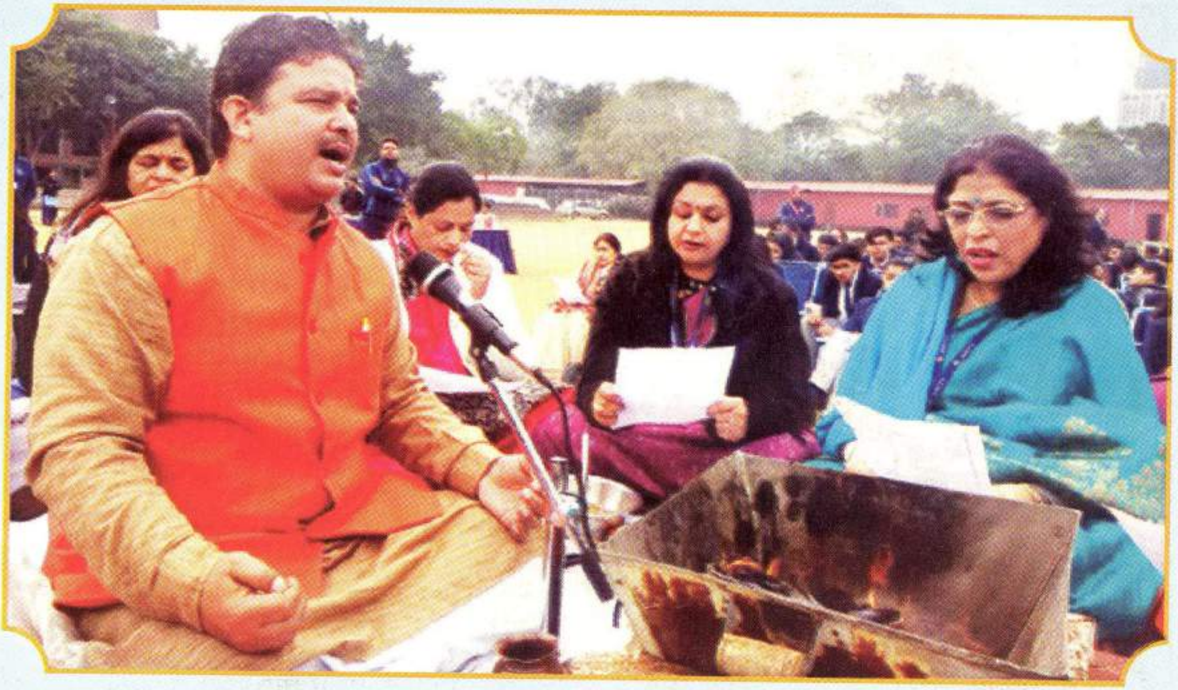

अमेटी इंटरनेशनल स्कूल में हवन करते हुए आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी के साथ स्कूल के शिक्षक और छात्रगण।

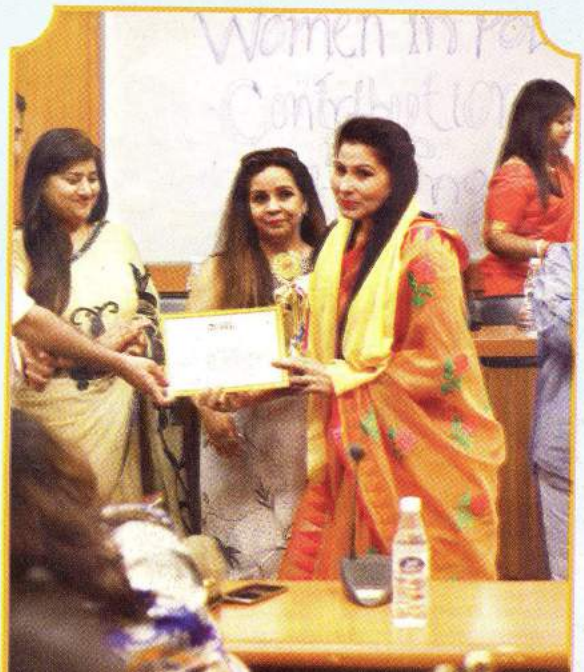

आर्ष कन्या गुरुकुल सोरखा नोएडा की अधिष्ठात्री का सम्मान।

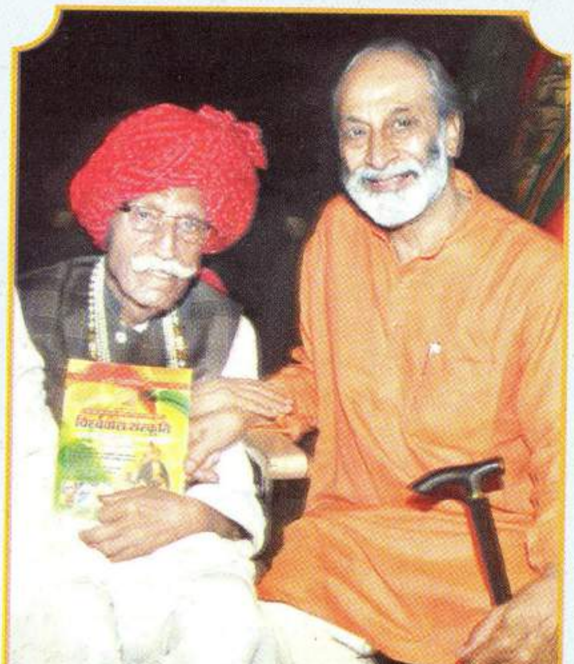

एम.डी.एच. के श्री धर्मपाल आर्य को विश्ववारा संस्कृति पत्रिका भेंट करते हुए प्रबंध संपादक आर्य कै. अशोक गुलाटी।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Date of Dispatch 12&13 Every Month

महाशय धर्मपाल (MDH) के साथ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार एवं महिला समाज की प्रधाना गायत्री मीना जी।

डी.ए.वी. कमेटी के प्रधान व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में नव निर्वाचित प्रधान श्री पद्म श्री पूनम सूरी, नवनिर्वाचित मंत्री एस.के. शर्मा के साथ आर्य समाज नोएडा के उप प्रधान आर्य कै. अशोक गुलाटी बधाई देते हुए।

आर्य समाज नोएडा में नव-निर्वाचित कोषाध्यक्ष श्री नरेंद्र सूद को दायित्व सौंपते हुए श्री आर.एल. लवानिया।

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221